चन्दामामा
अप्रैल १९७१
75 P

लज़्ज़तदार
मज़ेदार
ठंडा मीठा
पारले
एक्स्ट्रा-स्ट्राँग
पिपरमिण्ट
एक पैकेट में ९ पिपरमिण्ट—
कितनी कम कीमत पर!
मज़ेदार तरोताज़ा—
तरोताज़ा मज़ेदार
PARLE
Peppermint
everest/981/PP hin

चन्दामामा

अप्रैल १९७१

संपादकीय	... १	सच्चा ज्योतिष	... ३७
राक्षसी का बंजर	... ३	बड़े घर की दावत	... ३९
बड़ा कौन है?	... ७	होशियार लोग	... ४३
शिलारथ (धारावाहिक)	... ९	महाभारत	... ४९
बेताल कथा	... १७	शिवपुराण	... ५७
निपुण चोर	.. २१	संसार के आश्चर्य	... ६१
राजा की युक्ति	... २७	फ़ोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता	... ६४
अलीबाबा - चालीस चोर	३१		
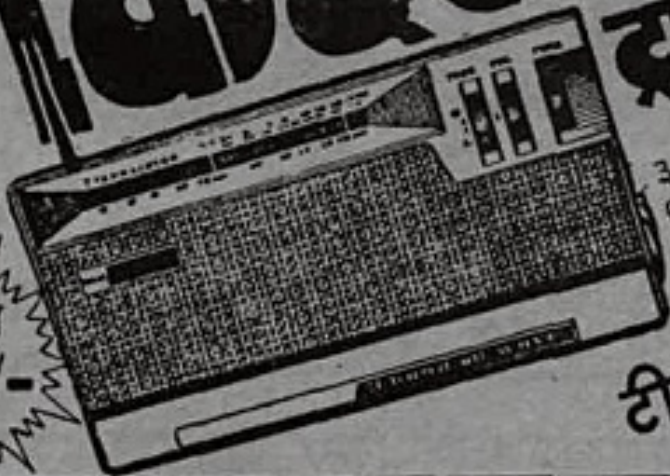
कोलगेट डेन्टल क्रीम से सांस की दुर्गंध रोकिये... दंतक्षय का दिन भर प्रतिकार कीजिये!

DC. G. 41 HN

वैज्ञानिक परीक्षणों से यह सिद्ध हो चुका है कि १० में से ७ लोगों के लिए कोलगेट सांस की दुर्गंध को तत्काल ख़त्म कर देता है और कोलगेट विधि से खाना खाने के तुरंत बाद दांत साफ़ करने पर अब पहले से अधिक लोगों का— अधिक दंतक्षय रुक जाता है। दंत-मंजन के सारे इतिहास की यह एक बेमिसाल घटना है। क्योंकि एक ही बार दांत साफ़ करने पर कोलगेट डेन्टल क्रीम मुंह में दुर्गंध और दंतक्षय पैदा करने वाले ८५ प्रतिशत तक रोगाणुओं को दूर कर देता है। केवल कोलगेट के पास यह प्रमाण है। इसका पिपरमिंट जैसा स्वाद भी कितना अच्छा है— इसलिए बच्चे भी नियमित रूप से कोलगेट डेन्टल क्रीम से दांत साफ़ करना पसंद करते हैं।

COLGATE
DENTAL CREAM

ज़्यादा साफ़ व तरोताज़ा सांस और ज़्यादा सफ़ेद दांतों के लिए... दुनिया में अधिक लोग दूसरे टूथपेस्टों के बजाय कोलगेट ही खरीदते हैं!

Chiclets
Chiclets
Chiclets
Chiclets
Chiclets

चन्दामामा

संचालक: चक्रपाणी

कागज़ और मुद्रण व्यय के हद से ज्यादा बढ़ जाने के कारण हम विवश होकर जुलाई से चन्दामामा का मूल्य ७५ पैसे से बढ़ाकर ९० पैसे कर रहे हैं। आप जानते हैं कि इसी लाचारी से सभी पत्रों का दाम बढ़ा दिया गया है। हमारी इस विवशता को देखते हुए आशा है, पूर्ववत आप लोगों का सहयोग प्राप्त होगा।

वर्ष: २३ अप्रैल १९७१ अंक: ८

उत्साह:, साहसं, धैर्यं, बुद्धि:, पराक्रम:
षड़ते यत्र तिष्ठंति तत्र देवोपि तिष्ठति ॥ १ ॥

[जहाँ उत्साह, साहस, धैर्य, बुद्धि, शक्ति और पराक्रम होते हैं, वहाँ भगवान रहता है ।]

रत्नै: महाब्देस्तुपुर्न देवा, न भेजिरे भीमविषेणभीतिम्
सुधां विना न प्रय युर्विरामं; न निश्चितार्थात् विरमंति धीरा: ॥ २ ॥

[देवता क्षीर सागर के रत्नों से तृप्त न होकर, कालकूट विष से न घबराकर, अमृत के पाने तक प्रयत्न करते रहें, इसी प्रकार साहसी व्यक्ति अपनी इच्छा के पूरा होने तक प्रयत्न को नहीं त्यागते ।]

प्रारभ्यते न खलु विघ्न भयेन नीचै:;
प्रारभ्य विघ्ननिहता विरमंति मध्या:;
विघ्नै: मह्रुर्मुहु रपि प्रतिहन्यमाना:
प्रारब्ध मुत्तमगुणा: न परित्यजंति ॥ ३ ॥

[अधम व्यक्ति विघ्नों से डरकर प्रयत्न ही नहीं करते । मध्यम प्रकार के व्यक्ति कार्य तो प्रारंभ करते हैं, पर विघ्न पड़ने से त्याग देते हैं, पर उत्तम व्यक्ति अनेक विघ्नों के उपस्थित होने पर भी अपने प्रयत्न को नहीं छोड़ते ।]

साहसी

राक्षसी का बंजर

मणिपुर के राज्य में बहुत सा प्रदेश बंजर था। उसे राक्षसी बंजर पुकारते थे। उस बंजर के बीच एक बिल था। लोग कहा करते थे कि उस बिल में एक राक्षसी है जो उस बंजर में प्रवेश करनेवालों को मार डालती है।

मणिपुर राज्य के राजा के मरने पर उसका पुत्र सुदर्शन गद्दी पर बैठा। उसने सोचा कि जनता के भय को दूर कर उस बंजर को खेती के लायक़ बनाया जाय। सुदर्शन के सुमंत नामक एक मित्र था। वह बड़ा बुद्धिमान था। इसलिए सुदर्शन ने अपना विचार सुमंत को सुनाया।

"तुम्हारे दादा-परदादाओं के जमाने से जो अंधविश्वास चले आ रहे हैं, उनको दूर करना इतना सरल नहीं है। हम यह कहे कि उस बिल में राक्षसी नहीं है, कोई विश्वास न करेगा। इसलिए हमें लोगों को कोई न कोई आशा दिलानी होगी। ऐसा करने के पहले हम वहाँ की हालत खुद देखेंगे।" सुमंत ने सुदर्शन को सलाह दी।

दोनों सब की आँख बचाकर राक्षसीवालें बंजर में गये। वह कई हज़ार एकड़ ज़मीनवाला प्रदेश था। उसके बीच एक बिल था। दोनों थोड़ी दूर तक उस बिल में उतरे। मगर ज्यों ज्यों वे भीतर गये, त्यों त्यों वह संकरीला था। उसमें राक्षसी का होना असंभव था। पर यह बात जनता को समझानी थी।

सुमंत ने दो हीरे निकाल कर बिल में डाल दिये। तब वे दोनों राजमहल को वापस लौटे। राजधानी में लौटते ही राजा सुदर्शन ने ढिंढोरा पिटवाया—"राक्षसी के बिल में प्रवेश करके उसके भीतर जो चीज़ है, उसका पता लगानेवाले को बढ़िया पुरस्कार दिया जायगा।"

विमल कुमार
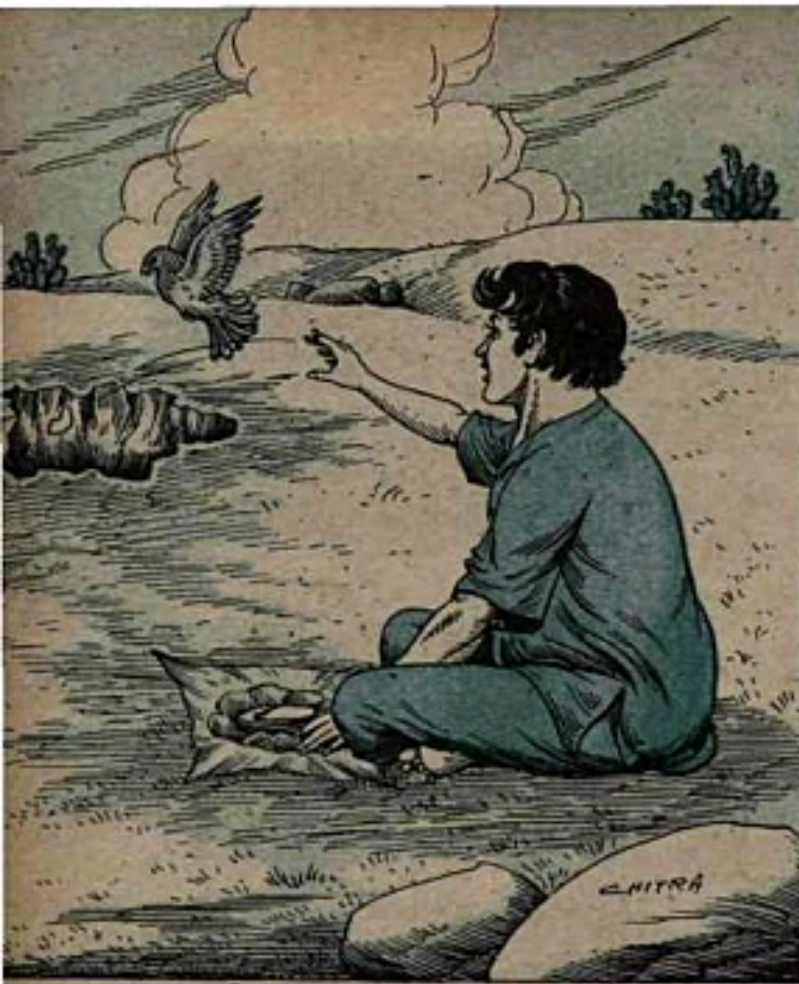
ढिंढोरा सुनकर कोई भी आगे न आया। सब ने यही सोचा कि राजा ने अपने लड़कपन के कारण ऐसा ढिंढोरा पिटवाया है। इसलिए किसीने बिल में जाने का प्रयत्न नहीं किया।

मणिपुर राज्य के एक गांव में रामदास और भीमसेन नामक दो भाई थे। भीमसेन अपनी गृहस्थी का पूरा भार अपने बड़े भाई पर छोड़ दिन भर पालतू कबूतरों के साथ खेला करता था।

एक बार रामदास को भीमसेन पर बड़ा गुस्सा आया। उसने भीमसेन को डांटा–"इस तरह नांहक़ आवारागर्दी करने से उस राक्षसी के बिल में कूदकर जान क्यों नहीं देते?" उसी दिन भीमसेन को राजा का ढिंढोरा सुनाई दिया।

भाई की डांट पाकर भीमसेन का पौरुष जाग उठा। उसने अपने मन में निश्चय कर लिया कि 'राक्षसी के बिल में कूद पड़ूंगा। क़िस्मत ने साथ दी तो राजा का पुरस्कार पाकर स्वतंत्र रूप से जीवन यापन करूँगा, नहीं तो राक्षसी के हाथों में मर जाऊँगा।' यह निश्चय करके उसने थोड़ा-सा खाना साथ में लिया। अपने पालतू कबूतर को कंधे पर रखकर बंजर की ओर चल पड़ा। वह राक्षसी के बिल के निकट पहुँचा। उसे डर था कि कहीं से राक्षसी आकर उसे मार डालेगी, फिर भी उसने बिल के भीतर झांककर देखा। उसमें राक्षसी तो थी नहीं, तो भी बिल में उतरने में उसे डर लगने लगा।

भीमसेन ने सोचा कि पहले खाना खाकर इसके बाद कोई उपाय सोचे। उसने रोटी का एक टुकड़ा तोड़कर बिल में डाल दिया। भीतर से कोई चीज़ आवे तो वह भाग जाना चाहता था। मगर अचानक उसके कंधे पर से कबूतर उड़ा और बिल में चला गया। भीमसेन ने सोचा कि अगर कबूतर सुरक्षित लौट आया तो वह भी बिल में उतरेगा और राजा का पुरस्कार पायेगा।

थोड़ी देर बाद कबूतर वापस लौट आया। मगर उसके मुँह में एक हीरा था। भीमसेन बड़ा प्रसन्न हुआ। उसके पास हीरा देख उसका भाई खुश होगा और आइंदा उसे नहीं डांटेगा। इस उत्साह को लेकर वह घर गया और वह हीरा अपने भाई रामदास को दिखाकर बोला–"देखते हो न? राक्षसी के बिल में से मैं एक हीरा लाया हूँ। इसे बेचकर मैं आराम से अपने दिन काटूँगा।"

उस हीरे को देखते ही रामदास के मन में दुर्बुद्धि पैदा हुई। उसने अपने भाई से कहा–"अरे, तुम इसे बेचोगे? राजा को मालूम हो जायगा तो तुमको फाँसी पर लटका देगा। फिलहाल तुम किसी से यह बात न कहो। थोड़े दिन बाद हम इसके बारे में कोई न कोई उपाय करेंगे।"

भीमसेन ने मान लिया। दूसरे ही दिन रामदास उस हीरे को लेकर राजमहल में गया और राजा के दर्शन करके बोला–"महाराज, राक्षसी के बिल से मैं यह हीरा लाया हूँ। आप मुझे बढ़िया पुरस्कार दिलाइये।"

सुदर्शन ने सुमंत को बुला भेजा।

दोनों ने उस हीरे की जाँच की। वह वही हीरा था जिसे सुमंत ने राक्षसी के बिल में डाल दिया था।

"इसके साथ एक और हीरा भी है। उसे तुमने हड़प लिया है, इसलिए तुमको

कारागार में बन्दी बनाना होगा।" सुमंत ने कहा।

रामदास घबड़ा उठा। बिनती करते बोला—"मुझे पुरस्कार भले ही न दे, मगर कारागार में न रखवाइयेगा।"

अगर वही बिल में उतर कर हीरा लाया होता, इतनी आसानी से उस पुरस्कार को छोड़ने तैयार न होता।

"सच बताओ, तुमको यह हीरा कहाँ से मिला?" सुमंत ने फिर पूछा।

रामदास ने सोचा कि शायद उसका भाई झूठ बोलता हो। हो सकता है कि उसने इस हीरे की चोरी की हो। यह इलजाम उसी पर लगाने के ख्याल से बोला—"महाशय, यह हीरा मेरा छोटा भाई लाया है। उसने कहा कि उसे यह हीरा राक्षसी के बिल में मिला है। मैं इससे अधिक कुछ नहीं जानता।"

"तब तो तुम घर जाकर अपने भाई को बुला लाओ।" राजा सुदर्शन ने कहा।

भीमसेन ने राजा के सामने सच्ची हालत बतायी। राजा को भी उसकी बातें विश्वास करने योग्य प्रतीत हुईं। राजा ने उसे उस रात को अपना अतिथि बना रखा और दूसरे दिन भरी सभा में राजा ने भीमसेन का अच्छा सम्मान किया।

"भीमसेन बड़ी हिम्मत के साथ राक्षसी के बिल में जाकर यह हीरा ले आया है। लोगों को यह बताने के लिए हमने ही यह हीरा राक्षसी के बिल में डाल दिया था कि उसमें राक्षसी नहीं है। इसके साहस पर प्रसन्न होकर हम राक्षसी का बंजर इसे इनाम में दे रहे हैं। जो लोग उस बंजर में खेती करना चाहते हैं, वे लोग उसका किराया चुकाकर जमीन भीमसेन से ले सकते हैं।" राजा ने भरी सभा में घोषणा की।

लोगों में राक्षसी बंजर के प्रति डर जाता रहा। सबने भीमसेन से अपनी जरूरत भर के लिए जमीन किराये पर ले ली। उस किराये के द्वारा भीमसेन बड़ा धनी बन गया।

बड़ा कौन है?

एक दिन एक किसान शहर जा रहा था। रास्ते में एक व्यापारी और एक अध्यापक से उसकी मुलाक़ात हो गयी। तीनों गपशप करते पैदल चले। चलते-चलते दुपहर हो गयी। तीनों को भूख लग रही थी। पर किसी के पास खाना न था। आस-पास में कोई गाँव तक न था। उस हालत में वे तीनों एक बगीचे के पास पहुँचे। बगीचे में कटहल लटक रहे थे। उसकी अच्छी बास आ रही थी।

तीनों ने बगीचे के माली से बताया कि उन्हें बड़ी भूख लगी है, इसलिए एक कटहल दिया जाय तो वे आपस में बांटकर अपनी भूख मिटा लेंगे। माली ने एक पका कटहल तोड़कर उनको दिया।

किसान कटहल को काटने लगा। उसके दिल में बाक़ी दोनों से ज्यादा हिस्सा पाने की इच्छा हुई। इस ख्याल से उसने कहा—"हम तीनों तीन पेशेवर हैं। मैं खेती करता हूँ, व्यापारी व्यापार करता है, और अध्यापक पढ़ाता है। इन तीनों पेशों में से जिसका पेशा बड़ा है, उसे एक हिस्सा ज्यादा मिलना चाहिये। तुम दोनों का इस बारे में क्या ख्याल है?" किसान का यह ख्याल था कि मनुष्य के लिए व्यापार की चीज़ों और पढ़ाई की अपेक्षा खाना ज्यादा मुख्य है, इसलिए अनाज पैदा करनेवाले उसे ज्यादा हिस्सा मिलना चाहिये। भूख से परेशान व्यापारी और अध्यापक उसके पेशे के महत्व को कम नहीं बतायेंगे।

किसान के मुँह से ये शब्द सुनकर अध्यापक ने कहा—"तुम्हारे तर्क के जवाब में मैं एक कहानी सुनाता हूँ। एक गाँव में एक अमीर था। उसके तीन बेटे थे। वे तीनों आवारे बनकर इधर-उधर

रजनी बाला

घूमा करते थे। उनकी आवारागर्दी पर उसका पिता बड़ा दुखी था।

"अमीर बूढ़ा होता जा रहा था। उसके मरते ही उसके तीनों बेटे उसकी ज़मीन-जायदाद को घंटों में खर्च कर डालेंगे। इसे रोकने के लिए अमीर ने एक उपाय सोचा।

अमीर ने अपने एक एक पुत्र को अलग बुलाकर वसीयत दिखायी। उसमें लिखा हुआ था कि उसकी मृत्यु के बाद उसकी जायदाद चार भागों में बांटी जाय और उससे जो बेटा अंगूठी पायेगा, उसे एक हिस्सा अधिक दिया जाय। अमीर ने हर एक बेटे से यही कहा-"देखो बेटा, तुम अपनी जिम्मेदारी समझकर इमानदारी से रहोगे तो वह अंगूठी तुम्हीं को दूँगा।"

कुछ दिन बाद अमीर की मौत हो गयी। पंचों ने एक जगह बैठकर वसीयत पढ़ी। उसकी जायदाद के चार हिस्से किये। तब उसके पुत्रों को बुलाकर पूछा- "तुम में से कौन अपने पिता की अंगूठी पा सका है?"

एक ने अंगूठी निकाल कर पंचों को दिखाते हुए कहा-"मैंने अंगूठी पायी है।" दूसरे, व तीसरे ने भी इसी प्रकार अंगूठियाँ दिखाईं। पिता ने एक दूसरे से बचाकर सबको अंगूठियाँ दी थीं। तीनों अंगूठियाँ एक समान थीं।

पंचों ने लाचार होकर जायदाद को समान रूप में बांटकर दिया। इस प्रकार कहानी सुनाकर अध्यापक ने कहा-"हम तीनों के पेशे उत्तम हैं। इस पर तर्क करने की कोई आवश्यकता नहीं। इसी तरह हम तीनों की भूख भी समान है। एक पेशेवाले को ज्यादा और दूसरे को कम भूख नहीं हो सकती। इसलिए हम इस फल को बराबर बांट लेंगे।"

किसान को अपने प्रलोभन पर लज्जा हुई। उसने फल के तीन बराबर के हिस्से किये, तीनों ने अपनी भूख मिटायी, तब वहाँ से आगे बढ़े।

शिलारथ

[६]

[गाँव के मुखिये की पुत्री को कोई उठा ले गये। मुखिये ने खड्गवर्मा तथा जीवदत्त पर संदेह करके उनको बन्दी बनाया। रात के वक़्त पहरेदार को डराकर भागने के लिए वे बाड़ी के द्वार तक पहुँचे। बाड़ी के उस पार एक जंगली हाथी घींकार करते उन्हें दिखाई दिया। तब—]

खड्गवर्मा बाड़ी के दर्वाज़े से बंधे रस्सों को अपने खड्ग से जल्दी-जल्दी काटने लगा। उस समय झोंपड़ी की ओर से एक काली आकृति उसके सामने आयी। खड्गवर्मा चौंक पड़ा और जल्द भागने के प्रयत्न में लगा रहा, तभी उस आकृति ने गरज कर कहा–"कौन है वहाँ? अरे पहरेदार, हमारे क़ैदी भागने को हैं। तुम कहाँ पर हो? जल्दी आ जाओ, इन्हें बन्दी बनायेंगे।"

वह कंठ मुंशी का था। दर्वाज़े के रस्सों के टूटते ही खड्ग और जीवदत्त भागने को हुए। इसी समय मुंशी दौड़ता आया और चिल्ला उठा–"ठहर जाओ! भागने की कोशिश करोगे तो तुम्हारा बध निश्चित है। धोखा देने की क़ोशिश न करो। इसी में तुम लोगों की भलाई है।"

मुंशी की चिल्लाहट ने हाथी को और भड़का दिया। हाथी ने अपने आगे के पैर

ज़मीन पर ज़ोर से पटक दिये, सूंड उठाये भयंकर रूप से घींकार करते अध खुले दर्वाज़े की ओर तेजी से दौड़ पड़ा। खड्गवर्मा और जीवदत्त छलांग मारकर बाड़ी पर जा बैठे। उन्हें पकड़ने के लिए मुंशी आगा-पीछे सोचे बिना अंधाधुंध दौड़ रहा था, उसने अचानक ठीक दर्वाज़े के सामने हाथी को देखा। मुंशी का कलेजा कांप उठा।

उस हालत में जो दुर्घटना हो सकती है, इसकी कल्पना करके जीवदत्त ने अपना सर दूसरी ओर कर दिया। क्योंकि वह मुंशी की हत्या होते देखना नहीं चाहता था। पर खड्गवर्मा तालियाँ बजाते चिल्ला उठा—"यह गाँव के मुंशी के रूप में स्थित कोई भीम होगा। शायद यह जंगली हाथी से मल्ल-युद्ध करने जा रहा है।"

इतने में मुंशी ज़ोर से चिल्ला पड़ा। हाथी ने देखा कि वह व्यक्ति उस पर प्रहार करने आ रहा है और उसे सूंड से उठाकर दूर फेंक दिया। मुंशी जाकर उसी पेड़ की डालों में जा गिरा जिस पर पहरेदार पहले ही बांध दिया गया था। क़िस्मत भली थी, इसलिए मुंशी को कोई चोट न आयी।

थोड़ी देर तक साँस लेने के बाद मुंशी फिर से चिल्लाने लगा—"वीरभद्र और रामभद्र भागते जा रहे हैं। जंगली हाथी गाँव में घुस पड़ा है। हाथी से बच जाओ या उसका बध कर डालो। साथ ही बंदियों को पकड़ो।"

हाथी ने झोंपड़ी पर हमला कर दिया। उसे तोड़-फोड़ डाला। हाथी का घींकार तथा मुंशी की चिल्लाहटें सुनकर गाँव भर के लोग जाग उठे। सब मशाल जलाये भाले व तलवार हाथ में लेकर घटना स्थल पर आ पहुँचे।

"भागनेवाले राजद्रोहियों को पहले पकड़ लीजिये, फिर हाथी की बाबत देखेंगे।" मुंशी फिर चिल्ला उठा।

गाँववाले लोग छोटे-छोटे दलों में बंटकर कुछ लोग हाथी की ओर और कुछ लोग बाड़ी के दर्वाज़े की तरफ़ दौड़ पड़े।

तब तक खड्गवर्मा और जीवदत्त बाड़ी पर से यह तमाशा देख रहे थे, अब उन्हें लगा कि वहाँ पर और देर तक रहना खैरियत नहीं है। दोनों बाड़ी पर से दूसरी ओर कूद पड़े। दूसरे ही क्षण पास की झाड़ी में से बाघ भयंकर रूप से गरज उठा।

"छीः छीः, यह भी कैसा गाँव है? यह भी कैसा जंगल है? यह जंगल तो बाघ और हाथियों से भरा हुआ है?" खड्गवर्मा खीझते स्वर में बोला।

"भाई, इसीलिए तो हम राजभट और गाँववालों से बचकर भाग रहे हैं? वरना ये लोग हमारा पीछा करके हिरण और खरगोश की तरह हमारा शिकार करते? इसलिए तुम ईश्वर को धन्यवाद दो।" जीवदत्त ने जवाब दिया।

दोनों में बातें हो रही थीं कि अचानक झाड़ी में से बाघ गरजते बाहर आ निकला। वह किसी भी क्षण उन पर हमला कर सकता था, यह सोचकर खड्गवर्मा झट पीछे हटा और बोला—"जीवदत्त, क्या इसे मार डालूं या बाड़ी के द्वार से गाँव के भीतर खदेड़ दूं? जल्दी बता

दो, देरी करने से खतरे का सामना करना पड़ेगा!"

"जैसा उचित समझो, करो।" जीवदत्त ने हँसते हुए उत्तर दिया।

उन्हें हाथी का घींकार, मुंशी तथा गाँववालों की चिल्लाहटें साफ़ सुनाई दे रही थीं। बाड़ी के दर्वाज़े की ओर एक भी आदमी आगे बढ़ नहीं रहा था। सब लोग हाथी को घेरकर उसे मार डालने के प्रयत्न में थे।

बाघ गरज कर खड्गवर्मा पर हमला करने को हुआ। तब उसने अपने भाले से बाघ की कमर पर प्रहार किया। चोट खाकर बाघ क्रोध में आया और उस पर
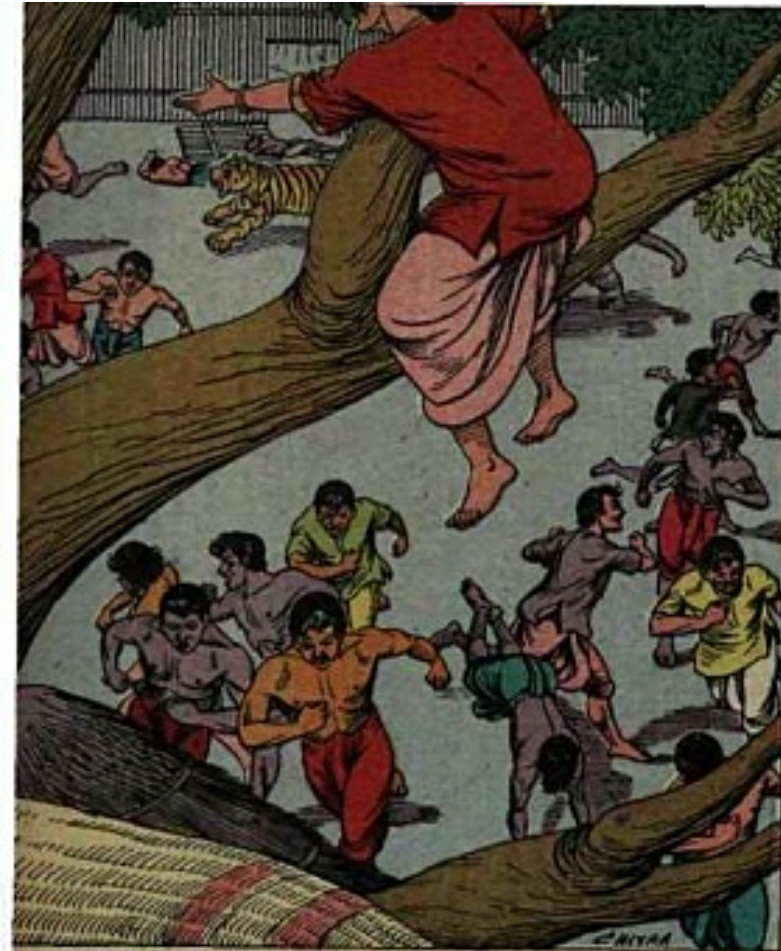
झपटने को हुआ। ठीक उसी समय जीवदत्त ने बाघ के जबड़े पर अपना दण्ड टिका दिया और उसे ज़ोर से ढकेल दिया। भाले और दण्ड की चोट खाकर बाघ घबरा गया और बाड़ी के खुले दर्वाज़े से गाँव के अन्दर भाग गया।

गाँव भर में भगदड़ मच गयी। हाथी के हमले से लोग पहले से ही परेशान थे, उल्टे बाघ को उनकी ओर आते देख डर के मारे तितर-बितर हो गये। मुंशी नीचे उतरने से डरने लगा। वह पेड़ की डालों पर बैठें ज़ोर-शोर से चिल्लाने लगा–"हमारे बन्दी जो भाग गये, वे मांत्रिक हैं, हो सकता है कि वे लोग हम पर हमला करने सिंह और भेडियों को भी खदेड़ दे। इसलिए तुम लोग जल्दी बाड़ी का दर्वाज़ा बन्द कर दो। वरना और खूँख्वार जानवर गाँव में घुस आयेंगे!"

मुंशी की चिल्लाहटें सुनकर खड्गवर्मा और जीवदत्त हँसते-हँसते लोटपोट हो गये। खड्गवर्मा अपना भाला उठाकर मुंशी की ओर दिखाते बोला–"वह कमबख्त कायर डालों पर बैठे ही चिल्ला रहा है। नीचे उतर कर वह लोगों की मदद क्यों नहीं करता? मेरे पास अगर धनुष और बाण होते तो मैं उस बूढ़े के सर को ताड़ के फल की भांति उड़ाकर मजा चखा देता!"

"धनुष और बाण प्राप्त करना कोई मुश्किल का काम थोड़े ही है? जंगल में हमें इनकी ज़रूरत अवश्य पड़ेगी। उस बूढ़े मुंशी के सर उड़ाने की बात बाद को सोचेंगे। पहले यह सोचो, हमारा यहाँ से भाग जाना उचित होगा!" जीवदत्त ने समझाया।

दोनों वहाँ से निकल पड़े। उस धुंधली चाँदनी में सावधानी से रास्ता देखते जंगल की ओर चल पड़े। रास्ते में उन लोगों ने तरह-तरह के जानवरों को देखा। मगर निडरता के साथ आगे बढ़नेवाले उन

वीरों को देख जंगली जानवर उनके रास्ते से हट गये।

सूर्योदय से पूर्व ही वे लोग बहुत दूर चल कर एक घने जंगल के बीच पहुँचे। वह सारा प्रदेश घने वृक्षों तथा पहाड़ों से भरे भयंकर प्रतीत हो रहा था।

"खड्गवर्मा, हम गाँव से दस-पंद्रह कोस दूर आ गये हैं? सूर्योदय के होने में ज्यादा वक़्त भी नहीं है। इन घने पेड़ों की डालों में क्या थोड़ी देर आराम करें?" जीवदत्त ने पूछा।

खड्गवर्मा ने मान लिया। दोनों एक पेड़ पर चढ़कर उसकी डालों से सटकर बैठ गये। वे दोनों खूब थक कर शिथिल हो गये थे। रात भर उन्हें नींद न थी, उल्टे बहुत दूर पैदल चलकर आये थे। इसलिए जल्द ही दोनों सो गये।

काफ़ी देर बाद उनके कानों में लोगों की बातचीत सुनाई दी। अचानक जीवदत्त की आँखें खुलीं। कुछ ही क्षणों में खड्गवर्मा ने भी जाग कर जीवदत्त की ओर देखा। जीवदत्त ने खड्गवर्मा की ओर संकेत किया कि वह मौन रहे। तब उसने ध्वनि की दिशा की ओर सर घुमाया।

वे दोनों जिस पेड़ पर बैठे थे, उससे थोड़ी दूर पर एक पेड़ के नीचे कुछ लोग वाद-विवाद कर रहे थे। उन सब के दाढ़ियाँ थीं, मुख पर भभूत और कुंकुम लगाये हुए थे। हाथों में त्रिशूल चमक रहे थे। देखने में वे लोग भयंकर लगते
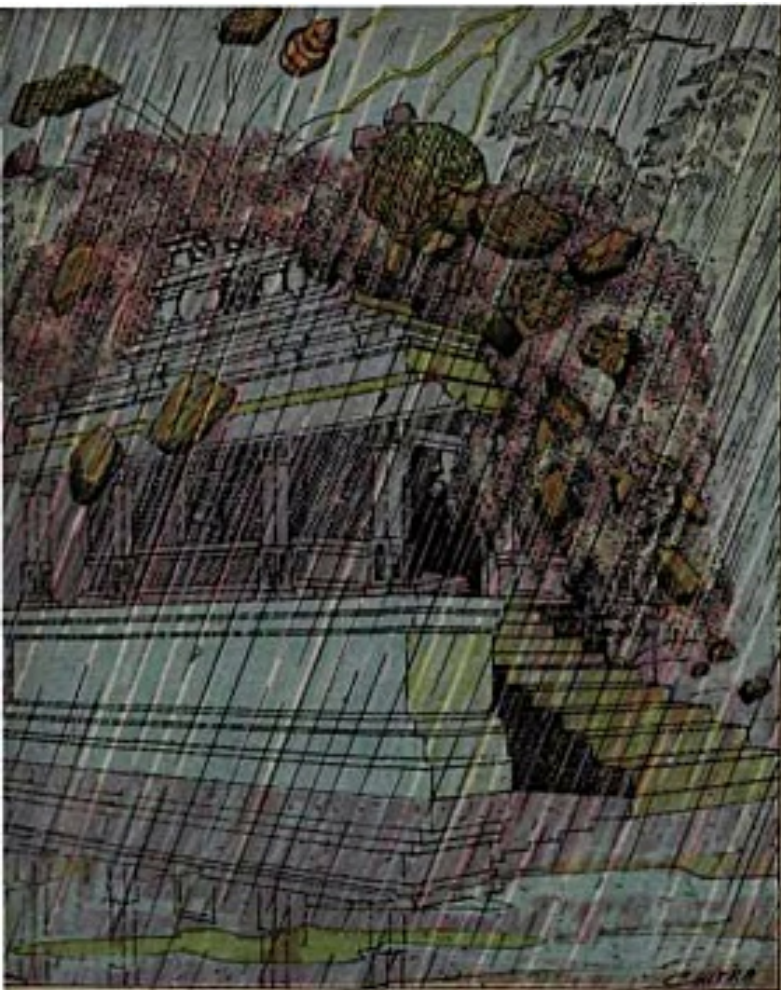
थे। उनके कंठों में रुद्राक्ष मालाएँ सुशोभित थीं। एक के सर पर भी रुद्राक्षमाला बंधी हुई थी। उसकी दाढ़ी सबसे लंबी थी। वह अपना त्रिशूल उठाये दूसरे को डरा रहा था। कुछ लोग उनके झगड़ते देख बीच-बचाव करने की कोशिश कर रहे थे। उनकी बातचीत साफ़ सुनाई नहीं दे रही थी।

वे झगड़नेवाले भैरव के भक्त थे। उस दल का नेता गर्णालिंगेश्वर था और उसका प्रधान शिष्य श्वेतभैरव था। उन दोनों के बीच इस बात में मनमुटाव हो गया था कि नया भैरव मंदिर कहाँ पर स्थापित किया जाय।

वे सब भैरव पाँच-छे महीने पहले तक विन्ध्याचल के बीच एक पुराने भैरव मंदिर को आश्रय बनाकर रहा करते थे। उस मंदिर की एक बूढ़ी भैरवी पुजारिन थी। एक त्योहार के दिन भैरव की बलि देने के लिए एक बालक को लाया गया। पर उस पुजारिन ने बालक की बलि देने से विरोध किया। उसी रात को उस प्रदेश में भयंकर तूफ़ान उठा। भैरव मंदिर पर बिजली गिरी, जिससे वह मंदिर उजड़ गया।

दल के नेता गर्णालिंगेश्वर ने सबको समझाया कि इस दुर्घटना का कारण यही है कि बूढ़ी भैरवी ने बालक की बलि देने से रोका। इसलिए उस पुजारिन की बलि देने का गर्णालिंगेश्वर ने षड़यंत्र रचा। जब इस बात का पता चला, तब श्वेतभैरव ने पुजारिन को गुप्त रूप से एक गुफा में छिपा रखा और अपने गुरु गर्णालिंगेश्वर से बताया कि बूढ़ी पुजारिन कहीं भाग गयी है।

गर्णालिंगेश्वर को शक हुआ कि बूढ़ी भैरवी पुजारिन के गायब होने में कोई षड़यंत्र है, मगर उचित सबूत न मिलने के कारण वह अपने प्रधान शिष्य श्वेतभैरव को दण्ड न दे सका। इसके बाद सब लोग नयी भैरवी का काम

देनेवाली कन्या की खोज में गाँव की ओर चल पड़े, तब गणलिंगेश्वर ने अपने शिष्य पर निगरानी रखी।

श्वेतभैरव को मानवों की बलि देना पसंद न था। इस रिवाज को बदलने के लिए सबके सामने अपने विचार घोषित करना भी ख़तरे से खाली न था। इसलिए वह अपने गुरु गणलिंगेश्वर को उस पद से हटाने के लिए गुप्त रूप से प्रयत्न करने लगा।

गणलिंगेश्वर ने अपने कुछ विश्वासपात्र भैरव भक्तों के द्वारा जान लिया कि उसका प्रधान शिष्य श्वेतभैरव उसके विरुद्ध अपना एक छोटा दल तैयार कर रहा है। इस पर गणलिंगेश्वर ने श्वेतभैरव पर भयंकर इलज़ाम लगाना चाहा। इसके लिए आवश्यक गवाह भी तैयार किये, साथ ही उस पर यह इलज़ाम भी लगाया कि वे लोग एक गाँव के तालाब के पास से जो कन्या को उठा ले आये, उसको रात के समय भाग जाने में श्वेतभैरव ने मदद देने की कोशिश की।

श्वेतभैरव ने साफ़ बताया कि उस पर जो इलज़ाम लगाया गया है, वह गलत है। इस पर नाराज़ हो गणलिंगेश्वर श्वेतभैरव को त्रिशूल से भोंकने को तैयार हो गया। पर कुछ शिष्यों ने बीच-बचाव

किया और कहा कि सच्चा हाल जानने के लिए उस कन्या को ही हाज़िर करना ठीक होगा।

इस पर गणलिंगेश्वर ने तालियाँ बजायीं। तुरंत एक त्रिशूलधारी युवा भैरव पेड़ों की आड़ में से आ खड़ा हुआ। उसे गणलिंगेश्वर ने आदेश दिया कि उस कन्या को हाज़िर किया जाय। वह चन्द मिनटों के बाद सोलह-सत्रह साल की एक कन्या को गुरु के सामने ले आया।

गणलिंगेश्वर ने उस कन्या से पूछा— "रात को तुमने भागने की कोशिश की है न? इसमें श्वेतभैरव ने तुम्हारी मदद

देने की बात नहीं कही? झूठ मत बोलो, सच सच बता दो। तुम्हें डरने की कोई जरूरत नहीं। वरना महाभैरव तुम्हारा सर उड़ा देंगे।"

कन्या ने बताया कि उसने भाग जाने की जरूर कोशिश की है, मगर उसे किसी ने मदद देने व प्रोत्साहन देने का आश्वासन नहीं दिया। गर्णालिंगेश्वर को छोड़ बाक़ी सभी लोग उस कन्या के उत्तर से संतुष्ट हो गये।

गर्णालिंगेश्वर ने उस कन्या को ले जाने का युवा भैरव को आदेश दिया, तब श्वेतभैरव की ओर क्रोध भरी दृष्टि से देखते उसकी कमर में लटकनेवाली रुद्राक्षमाला को जोर से पकड़ कर बोला– "मेरे बाद तुम इन भैरव भक्तों का गुरु किसी भी हालत में नहीं बन सकते। तुम तो धोखेबाज हो। मैं चाहूँ तो अभी तुमको भैरव की बलि दे सकता हूँ। मगर तुम्हारे प्रति विश्वास रखनेवाले लोग हमारे दल में बहुत हैं, इसलिए फिलहाल मैं तुमको प्राणों के साथ छोड़ देता हूँ।"

श्वेतभैरव की आँखें लाल हो उठीं। गुस्से में आकर वह त्रिशूल उठाकर अपने गुरु की छाती में भोंकने के लिए तैयार हो गया। तब उसके एक मित्र ने रोकते हुए उसके कंधे पर हाथ रखा।

पेड़ पर बैठे खड्गवर्मा और जीवदत्त यह झगड़ा देख रहे थे। मगर उनकी बातचीत उन्हें साफ़ सुनाई नहीं दे रही थी। एक कन्या को पेड़ों की आड़ में से ले जाते उन्होंने देखा और सोचा कि वह कन्या शायद गाँव के मुखिये की पुत्री होगी।

"खड्गवर्मा, हमें उस कन्या को इन भैरव भक्तों से बचाना होगा!" जीवदत्त ने कहा।

"जरूर बचायेंगे! हो सके तो इन भैरवों में से कुछ लोगों को वनदेवी, बाघ और भेड़ियों के आहार के रूप में सौंप देंगे।" खड्गवर्मा ने कहा।

(और है)

लक्ष्मी और सरस्वती

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया, पेड़ से शव उतारकर कंधे पर डाल सदा की भांति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा तब शव में स्थित बेताल ने कहा–"राजन, मेरा संदेह है कि अगर तुम्हारा प्रयत्न सफल हुआ तो उस फल का तुम अनुभव करोगे या विजयश्री की भांति उसे त्याग दोगे। तुम्हारे श्रम को भुलाने के लिए मैं कहानी सुनाता हूँ, सुनो।"

बेताल यों कहने लगा–उज्जयिनी नगरी में एक गरीब पंडित था। उसके विजयश्री नामक पुत्री और दो पुत्र भी थे। उस पंडित के घर जो भी चर्चा होती, उसे विजयश्री ध्यान से सुना करती थी। वह एकसंतग्राही थी, इसलिए जिस बात को वह एक बार सुनती, उसे भूलती न थी। ज्यों ज्यों वह बढ़ती गयी, त्यों त्यों वह असाधारण कविता करने की शक्ति प्राप्त

बेताल कथाएँ

करती गयी। वह आशु रूप में श्लोक कहने की स्थिति से लेकर प्रबंध काव्य लिखने की क्षमता भी प्राप्त कर सकी। जो भी उसकी रचना पढ़ता, वह यही कहता कि विजयश्री साक्षात् सरस्वती का अवतार है।

विजयश्री अपने पिता के साथ छोटी बड़ी सभाओं में जाने लगी। इस तरह उसकी प्रतिभा का प्रचार होता गया। इस प्रतिभा के साथ जब वह युक्त वयस्का हुई, तब वह देवता नारियों को भी भ्रम में डालनेवाली सौंदर्यवती के रूप में बदल गयी। उसकी कविता और सौंदर्य पर मुग्ध हो.कर अनेक लोगों ने उसके साथ विवाह करना चाहा। मगर उसने चन्द्रशेखर नामक एक युवक को अपने पति के रूप में मन में वर लिया था। दुर्भाग्यवश चन्द्रशेखर भी गरीब था, पर वह विजयश्री की कविता पर मुग्ध था। इसलिए विजयश्री ने अपने मन में निश्चय कर लिया कि कवयित्री के रूप में जब उसकी थोड़ी बहुत आमदनी होने लग जायगी त्यों ही विवाह करेगी।

इस बीच उस देश के राजा को विजयश्री के सौंदर्य तथा उसकी प्रतिभा का समाचार मिला। इसलिए राजा प्रति वर्ष जो पंडितों की सभा बुलाता था, उस में विजयश्री को भी राजा ने निमंत्रण भेजा।

विजयश्री ने सोचा कि राजा यदि उसका सत्कार करे तो उसकी गरीबी जाती रहेगी और वह अपनी पसंद के युवक के साथ विवाह कर सकती है। यह सोच कर विजयश्री भी पंडितों की सभा में गयी। चर्चा के समय बुजुर्गों की अनुमति लेकर विजयश्री ने अपने विचार प्रकट किये और बड़े बड़े पंडितों को भी आश्चर्य चकित कर दिया।

इसके बाद कविता गोष्ठी हुई। अन्य कवियों के साथ विजयश्री ने भी अपनी कविता का पाठ किया। उसकी कविता पर पंडितों ने आश्चर्य के साथ आनंद भी

प्रकट किया। राजा भी मुग्ध हुआ। विजयश्री को अनेक पुरस्कार दिये और कुछ समय तक अपने महल में अतिथि के रूप में रहने की मांग की। विजयश्री ने सोचा, कवयित्री के रूप में उसका जन्म सार्थक हुआ और उसने राजा के आतिथ्य को कृतज्ञता पूर्वक स्वीकार किया।

राजमहल में क़दम रखते ही विजयश्री का जीवन बिलकुल बदल गया। बहुत जल्द वह यह बात भी भूल गयी कि गरीबी कैसी होती है? अंतःपुर में उसकी सेवा करने के लिए अनेक दासियाँ थीं। उसे सुन्दर वस्त्र पहनाये जाते थे। जहाँ भी जाना होता, पालकी में बैठकर जाती। प्रति दिन वह नृत्य और संगीत का आनंद उठाती। वह सोचने लगी कि स्वर्ग का सुख इस से बढ़कर उत्तम क्या होगा! प्रति दिन युवराज उसके पास आता, शिकार और युद्ध संबंधी बातें सुनाया करता।

इस नये वातावरण में विजयश्री को लगा कि उसने मानों पुनर्जन्म प्राप्त किया हो। इस जिंदगी में पांडित्य और कविता की चर्चाएँ नहीं चलती थीं। उसकी पहले की जिंदगी को याद दिलाने वाली कोई घटना न होती थी। अब पहले की भांति उसके मुंह से आशु रूप में श्लोक भी निकलते न थे।

इस जिंदगी में चार चाँद लगाने वाली एक बात और हुई। एक दिन युवराज ने विजयश्री के पास जाकर कहा—"विजयश्री, मैं तुमसे विवाह करना चाहता हूँ। मैं ने राजा और रानी से भी अनुमति ले ली है।" इस पर आश्चर्य चकित हो विजयश्री ने अपना निश्चय दूसरे दिन सुनाने की अनुमति माँगी।

विजयश्री रात भर सोचती रही। अंत में वह एक निर्णय पर पहुँची। सवेरा होते ही उसने रानी के दर्शन कर के बताया—"महारानी जी, मैं युवराज के साथ विवाह करने का उद्देश्य नहीं रखती। मुझे राजमहल में जो आदर-सत्कार प्राप्त

हुआ, उस के लिए मैं अत्यंत ही कृतज्ञ हूँ। इसलिए आपसे मेरा निवेदन है कि मुझे अपने घर भिजवाने की कृपा करें।"

उसी दिन राजा ने विजयश्री को सादर उसके पिता के पास भेजा। इसके कुछ समय बाद विजयश्री का चन्द्रशेखर के साथ विवाह हुआ।

बेताल ने यह कहानी सुना कर कहा– "राजन, विजयश्री ने ऐसे विवेक का कैसे परिचय दिया? थोड़े दिन तक राजमहल का सुख भोगने पर उसका सर चढ़ गया? या गरीबी को पूर्णरूप से भूल जाने के कारण वह क्या यह सोच न पायी कि फिर से गरीबी में जाने पर उसकी हालत क्या होगी? अथवा युवराज के स्वयं विवाह करने की इच्छा प्रकट करने पर उसने अपने को कहीं अधिक माना? अलावा इसके रात-भर वह क्या सोचती रही? इन संदेहों का समाधान जानते हुये भी न दोगे तो तुम्हारा सर टुकड़े-टुकड़े हो जायगा।"

इस पर विक्रमार्क ने बताया–"विजयश्री ने बड़ा विवेक का ही परिचय दिया है। यह सच है कि युवराज विजयश्री के सौंदर्य को देख उस पर मोहित हुआ है। पर राजमहल में विजयश्री के क़दम रखने का कारण उसका पांडित्य ही है। इस अभाव के होते हुए भी विजयश्री को राजमहल का जीवन स्वर्ग तुल्य प्रतीत हुआ। युवराज ने जब उसके साथ विवाह करने की इच्छा प्रकट की, तब उसे चन्द्रशेखर की भी याद आयी होगी। उसने स्पष्ट रूप से समझ लिया होगा कि युवराज के साथ विवाह करने का मतलब सरस्वती को ठुकरा कर लक्ष्मी की शरण में जाना ही है। मगर लक्ष्मी को भी ठुकराना वैसे सरल काम न था। इसका निर्णय करने के लिए ही उसे रात भर नींद को तिलांजली देकर सोचना पड़ा।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पेड़ पर जा बैठा।

(कल्पित)

निपुण चोर

रुमेनिया की राजधानी में एक निपुण चोर था। एक दिन वह किसी गाँव में जा रहा था। रास्ते में एक और चोर से उसकी भेंट हुई। वह गाँव का चोर था और शहर में चोरी करने चला आ रहा था। दोनों की बातचीत में यह बात खुल गयी कि दोनों का एक ही पेशा है।

शहर के चोर ने गाँव के चोर से कहा–"देखे तुम्हारी निपुणता, कौए के घोंसले से उसकी आँख बचाकर अण्डे चुरा लाओ।" गाँव का चोर पेड़ पर चढ़ा। मादा कौआ अण्डे सेंकते बैठी थी, चोर ने उसकी आँख बचाकर अण्डे उठाया, अपनी जेब में डाल पेड़ से उतर आया। मगर नीचे उतर कर ज्यों ही उसने अपनी जेब में हाथ डाला, अण्डे न थे। शहर के चोर ने उन अण्डों को अपने हाथ से दिखाते हुए कहा–"तुम निपुण चोर हो। चोरी करने में तुम मेरा साथ दोगे तो मैं तुम्हारा हिस्सा दूंगा। समझें!" गाँव के चोर ने उस शर्त को मान लिया।

दोनों ने उस रात को राजा का खज़ाना लूटने का निर्णय किया। अंधेरे के फैलते ही दोनों राजमहल पर चढ़ गये। छत पर के शीशे के गवाक्षों द्वारा खज़ाने का पता लगाया। उसमें पीपे भरकर सोने के सिक्के थे। शहर के चोर ने गाँव के चोर को रस्सी की मदद से शीशे की खिड़की के ज़रिये खज़ाने में उतारा। गाँव के चोर ने एक थैली में सोने के सिक्के भर दिये और ऊपर आया। इसके बाद वे दोनों राजमहल से चले गये।

दूसरे दिन राजा ने रोज़ की भांति खज़ाने की जाँच की और पूछा–"खज़ाने में कौन आया था?"

रुमेनिया की लोक कथा

"कोई नहीं आया, महाराज!" पहरेदार ने उत्तर दिया।

राजा सीधे कारागृह की ओर गया। वहाँ के एक बूढ़े बन्दी से पूछा—"किसी ने खज़ाने में प्रवेश कर दो हज़ार सोने के सिक्कों को हड़प लिया है, मगर दीवार में कहीं भी सेंध नहीं है। पहरेदार कहता है कि कोई भीतर नहीं आया है। इसका रहस्य क्या होगा?"

"महाराज, सेंध जरूर होगा। आप खज़ाने के भीतर धुआँ करके पता लगाइये कि वह धुआँ किस ओर जाता है? रहस्य अपने आप खुल जायगा।" बूढ़े चोर ने समझाया। राजा ने खज़ाने के अन्दर धुआँ कराया, छत की शीशेवाली खिड़की से होकर धुआँ बाहर निकलने लगा। राजा ने जब यह बात बूढ़े चोर को सुनायी, तब उसने कहा—"वह चोर फिर से आयेगा। आप उस खिड़की की मरम्मत कराये बिना वैसे ही छोड़ दीजिये और खिड़की के नीचे बड़े पीपे में गाढ़ी शरबत भरवा दीजिये। चोर उसमें फँस जायगा और आपके हाथ लग जायगा।"

बूढ़े चोर का अनुमान सही निकला। गाँव और शहर के चोरों ने परामर्श किया—"खज़ाने में काफ़ी सोना भरा हुआ है। राजा को चोरी का पता लगने के पहले हमें थोड़े और सिक्के चुराने हैं।" यह सोचकर दूसरे दिन रात को वे दोनों फिर आये। गाँव का चोर रस्सी की मदद से खज़ाने में उतरा और गाढ़ी शरबत में धँस गया।

"भाई, धोखा खा गया। मैं इस पीपे में धँस गया हूँ। मुझे ऊपर खींचना तुम्हारे लिए ना मुमक़िन है, मैं राजा के हाथों में प्राणों के साथ न पड़ूँ, इसलिए तुम मुझे जहर देकर भाग जाओ।" गाँव के चोर ने उपाय बताया।

"डरो मत भाई। मेरे पास एक ऐसी दवा है जिसके खाने से तुम मरे हुए आदमी के समान हो जाओगे। तुम यह दवा निगल जाओ, कल आकर मैं तुम्हारी

रक्षा करूँगा।" शहर के चोर ने बताया। इसके बाद वह रस्सी की मदद से नीचे उतरा। उस दवा के खाते ही गाँव के चोर का शरीर मुर्दा जैसा हो गया।

दूसरे दिन सवेरे राजा ने खजाने में आकर चोर को देखा और बोला—"ओह, चोर पकड़ा गया, ठहरो, तुम्हारी खबर लेता हूँ।" मगर राजा ने देखा, चोर मरा पड़ा है। राजा का उत्साह मंद पड़ गया। इसलिए उसने कारागार में जाकर बूढ़े चोर की सलाह माँगी।

"महाराज, ये लोग बड़े निपुण चोर मालूम होते हैं।" बूढ़े चोर ने कहा।

"क्या इसके अलावा एक और चोर भी है?" राजा ने पूछा।

"दूसरा न होता तो यह कैसे मर गया? यह तो आत्महत्या नहीं कर सकता। शरबत में धँस जाने से जान तो निकल नहीं जाती। फिर भी उस दूसरे चोर को पकड़ने का एक उपाय है। इसकी लाश ले जाने के लिए वह ज़रूर आयेगा। आप एक काम कीजिये। शहर के प्रवेश द्वार पर एक कुर्सी में इस चोर की लाश रखवा दीजिये और पहरेदारों को तैनात कीजिये।" बूढ़े चोर ने उपाय बताया।

बूढ़े चोर के कहे मुताबिक़ शहर का चोर अपने दोस्त को बचाने का प्रयत्न

करने लगा। उसने एक सफ़ेद घोड़ा, एक गाड़ी और चार शराब की झारियाँ खरीद लीं। तब बूढ़े का वेष धरकर शराब की झारियों को गाड़ी पर लादे नगर के द्वार तक पहुँचा। उसके पचास गज की दूरी पर अपनी गाड़ी को उल्टा कर चिल्ला पड़ा—"मेरी गाड़ी उलट गयी। शराब की झारियाँ गिर गयीं। मुझे बचाइये।"

पहरेदारों ने कहा—"अरे बूढ़े, अगर तुम हमें शराब की एक झारी दोगे तो हम तुम्हारी गाड़ी को खड़ा कर देंगे।"

"हजूर, मैं कब इनकार करता हूँ? एक झारी दूंगा। मेरी मदद कीजिये तो।" शहर के चोर ने पूछा।

पहरेदारों ने गाड़ी खड़ी कर दी। शराब की तीन झारियाँ गाड़ी पर लादकर चौथी ले ली, और बारी-बारी से पीने लगे। उन्हें पता न था कि शहर के चोर ने उस शराब में नींद लानेवाली दवा मिला दी है। जब पहरेदार नींद के नशे में ऊँघ रहे थे, तब शहर के चोर ने गाँव के चोर को दिखाते हुए पहरेदारों के सरदार से पूछा–"सरदारजी, यह कौन है?"

"अरे, यह एक चोर का बच्चा है!" सरदार ने जवाब दिया।

"तब तो यह मेरे घोड़े को भगा ले जायगा।" शहर के चोर ने कहा।

"अरे बूढ़े, तेरा दिमाग खराब तो नहीं हो गया है? मरा हुआ चोर तेरे घोड़े को कैसे भगा ले जायगा?" सरदार ने पूछा।

"वह ज़रूर मेरे घोड़े को भगा ले जायगा। चोर पर यक़ीन नहीं करना चाहिये।" बड़े चोर ने कहा।

"अरे बूढ़े, अगर वह तेरे घोड़े को भगा ले जायगा तो उसका दाम मैं तुझे दूँगा। समझें," सरदार ने समझाया।

इसके बाद पहरेदार एक एक करके नींद के नशे में आ गये। तब शहर का चोर गाँव के चोर के पास गया और उसके मुँह में कोई दवा डाल दी। थोड़ी देर बाद गाँव के चोर ने आँखें खोल दीं।

"देखो भाई, ये लोग बड़ी देर तक नींद के नशे में न होंगे। तुम घोड़े पर चढ़कर अपनी जगह पहुँच जाओ। सवेरा होते ही मैं तुमसे आ मिलूँगा।"

गाँव का चोर घोड़े पर सवार हो चला गया। तब शहर का चोर अपनी जगह आकर सो जाने का अभिनय करने लगा।

थोड़ी देर बाद पहरेदार एक एक करके होश में आ गये। यह देख वे लोग चौंक गये कि मरे हुए चोर के साथ घोड़ा भी गायब है। सरदार ने आँख मलकर फिर देखा और बोला–"बूढ़े का कहना सच निकला।"

उसने नींद का अभिनय करनेवाले शहर के चोर को जगाया और कहा–"अरे बूढ़े, मेरी समझ में नहीं आता, यह गड़बड़ कैसे हो गयी? तुमने ठीक ही कहा–अब न चोर है और न घोड़ा। मगर यह बात राजा को मालूम हो जायगी तो हमारी चमड़ी उधेड़ देंगे। अरे बूढ़े, मैं तुम्हारी घोड़े का दुगुना दाम दूंगा। पर यह बात तुम किसी से मत कहो।" सरदार गिड़गिड़ाने लगा।

शहर के चोर ने अपना काम तो साध लिया और साथ ही पाँच सौ सिक्के भी पाकर वह चला गया।

राजा ने ये बातें कारागार में जाकर बूढ़े चोर से बतायीं तो उसने कहा–"महाराज, मैंने पहले ही बताया था कि वह चोर बड़ा निपुण है। आप एक बड़े पुरस्कार की घोषणा कर दीजियेगा तो वह ज़रूर आपके पास आवेगा।"

बूढ़े की बातें राजा को सही मालूम हुईं। उसने चोर के लिए बड़े पुरस्कार की घोषणा की। शहर के चोर ने राजा के सामने पहुँचकर कहा–"महाराज, मैं ही वह चोर हूँ। पुरस्कार लेने आया हूँ।"

"मुझे क्या सबूत है कि तुम्हीं वह चोर हो।" राजा ने चोर से पूछा।

चोर ने दूर पर एक बैल को हांक ले जानेवाले को दिखाकर कहा–"चाहे तो मैं उस बैल को चुरा ला सकता हूँ।" उस बैल को हांक ले जानेवाला गाँव का चोर था।

"तुम उस बैल को लाओगे तो मैं तुम्हारी बात पर यक़ीन करूँगा।" राजा ने कहा।

शहर के चोर ने बैल हांक जानेवाले से कुछ कहा तो वह अपना सर पीटते भाग खड़ा हुआ। तब शहर का चोर बैल हांकते राजा के पास आया। इस पर राजा ने खुश होकर चोर को बहुत बड़ा पुरस्कार दिया। उसे गाँव और शहर के दोनों चोरों ने बराबर बांट लिया और आराम से अपने दिन बिताने लगे।

तीन प्रकार की सजा

एक गाँव में एक घी का व्यापारी था। वह लोभी था। इसलिए वह घी में सस्ते दाम का तेल मिलाकर बेचा करता था। अतः घी से बदबू निकला करती थी। आख़िर अफसरों ने घी के व्यापारी पर इलज़ाम लगाया।

न्यायाधीश ने व्यापारी को तीन प्रकार की सजाएँ दीं और पूछा कि इनमें से कोई एक सज़ा तुम्हीं चुन लो। वे सजाएँ थीं–एक लोटे भर बदबूदार घी पीना, या सौ कोड़े खाना अथवा सौ रुपये का जुर्माना भरना।

घी के व्यापारी को रुपये देना और कोड़े खाना पसंद न था। इसलिए उसने लोटे भर बदबूदार घी पी जाने को मान लिया। पर आधा गिलास घी पी सका कि उसे कै हुई, इसलिए वह कोड़े खाने को तैयार हो गया। मगर चार कोड़ों की मार पड़ते ही उसे लगा कि उसकी जान निकल जायगी। इस वजह से व्यापारी ने सौ रुपये जुर्माना चुकाकर तीनों प्रकार की सज़ा पायी।

—रामकुमार तिवारी

राजा की युक्ति

एक नगर में एक जौहरी था। वह गहनों के व्यापार के साथ गहने गिरवी रखकर थोड़े से ब्याज पर उधार भी देता था। लेकिन वह भोले और गरीबों को धोखा देता था। वह धोखा इस तरह करता कि जब लोग उसका कर्ज चुकाते तब उनके असली गहनों की जगह नकली गहने लौटा देता था। मगर इस बात का उन लोगों को पता न चलता था।

एक बार जयंत नामक युवक ने उस जौहरी के यहाँ एक क़ीमती मोतियों की माला गिरवी रखी और उधार लिया। व्यापारी ने सोचा कि यह युवक भोला है और उसके धोखे को समझ न पायगा। यह सोचकर व्यापारी ने उसी माला जैसी एक नकली माला बनाकर अपने पास रखी। जब युवक ने उसका कर्ज चुकाया, तब व्यापारी ने वह नकली माला लौटा दी।

जयंत ने माला की जांच करके बताया— "यह माला तो मेरी नहीं है। मेरी माला पर मेरे दादा का नाम खुदा है। इसलिए मेरी माला मुझे वापस लौटा दो।" मगर व्यापारी ने नहीं माना।

जयंत ने उस माला को ले जाकर एक सुनार को दिखाया तो उसने बताया कि माला के सोना व मोती असली नहीं हैं, बल्कि नकली हैं। तुरंत उसने राजा के पास जाकर फ़रियाद की कि व्यापारी ने उसके साथ दगा दिया है।

राजा ने व्यापारी को बुलाकर पूछा।

"महाराज, मेरे पास कई लोग गहने गिरवी रखकर उधार ले जाते हैं। कुछ दिन बाद उधार की रक़म चुकाकर अपने गहने वापस ले जाते हैं। मैं इस युवक से

रामदीन पांडे

पहले परिचित नहीं हूँ। ऐसी हालत में मैं इसको धोखा क्यों देता?" व्यापारी ने कहा।

"यह युवक कहता है कि इसने तुमको जो माला दी, उस पर इसके दादा का नाम अंकित है। यह भी बताता है कि वह माला असली सोने व मोतियों की बनी है। तुमने इसे जो माला दी, यह तो बिलकुल नकली है। इस पर किसी का नाम भी तो नहीं है। इसका तुम क्या जवाब देते हो?" राजा ने व्यापारी से फिर पूछा।

"तब तो इसका मतलब यही हुआ कि इस युवक ने मेरे पास नकली माला गिरवी रख कर उधार लिया है। यह कैसा दगा है! कैसा अन्याय है?" व्यापारी ने जवाब दिया।

"तब तो इस में तुम्हारा कोई दोष नहीं है। तुम दोनों जा सकते हो।" राजा ने व्यापारी और जयंत से भी कहा। व्यापारी बड़ी प्रसन्नता के साथ अपने घर लौटा तो जयंत निराश हो वापस चला गया।

उन दोनों के चले जाने पर राजा ने अपने मंत्री से कहा—"यह व्यापारी जो है, बड़ा ही दगाखोर है। इसे रंगे हाथ पकड़ना होगा।"

मंत्री ने अचरज में आकर पूछा—"आपको इस बात का पता कैसे चला?"

"गहनों का व्यापारी नकली सोने को भूल से भी असली मान नहीं सकता। अलावा इसके यह युवक जयंत व्यापारी को धोखा देना चाहता तो उसका कर्ज ब्याज के साथ नहीं चुकाता! व्यापारी खुद कहता है कि इस युवक से बिलकुल अपरिचित है। इसलिए साफ़ मालूम होता है कि इस व्यापारी ने इसके पहले ही अनेक लोगों को धोखा दिया है। इसलिए इसका रहस्य खोलना है। हम एक उपाय करेंगे।" इन शब्दों के साथ राजा ने मंत्री को एक उपाय सुझाया।

दूसरे दिन मंत्री ने अपने एक नौकर को बुलाकर उसके हाथ में हीरों का एक कंगण दिया और उसे समझाया कि क्या करना होगा। तब उसे उस व्यापारी के पास भेजा।

नौकर ने व्यापारी के पास जाकर कहा-"सरकार, मैं तो परदेशी हूं। यहाँ पर व्यापार करने के ख्याल से आया हूं। मेरे पास सिवाय इस कंगण के कुछ नहीं है। इसका दाम लगभग दस हजार सिक्के होगा। क्या आप इसे खरीदना चाहेंगे?"

व्यापारी ने एक बार उस आदमी की ओर एड़ी से लेकर चोटी तक देखा। कंगण को देख समझा कि यह चोरी का माल होगा, तब कहा-"तुम जो दाम बताते हो, वह बहुत ही ज्यादा है। मैं दो हजार सिक्कों में खरीद सकता हूं।"

"यह तो बड़ा अन्याय है। कम से कम पाँच हज़ार सिक्के तो दे दीजिये।" नौकर ने कहा।

व्यापारी को उसकी बातों से स्पष्ट मालूम हो गया कि यह तो चोरी का माल है। क्यों कि उस कंगन का दाम कम से कम बारह हज़ार सिक्कों का होगा। इसलिए व्यापारी ने कहा– "तुम चाहोगे तो पाँच सौ सिक्के और दे सकता हूँ। चाहे तो बेच दो, वरना वापस ले जाओ।"

"क्या करूँ, ऐसा ही दीजिये।" यह कहकर नौकर दाम ले चला गया। उसी समय नगर रक्षक ने प्रवेश करके कहा– "पिछली रात को राजमहल में चोरी हो गयी है। इसलिए हम यह जांचने के लिए आये हैं कि चोरों ने आप जैसे व्यापारियों को गहने बेच दिये होंगे।"

"जाँच लीजिये, साहब! गहनों की मेरी यही तिजोरी है।" व्यापारी ने कहा।

तिजोरी के खोलते ही ऊपर ही कंगण दिखाई पड़ा। "यह कंगण तो राजमहल का है। हम इस तिजोरी को अपने साथ ले जाते हैं। आप भी हमारे साथ चलिये।" नगर रक्षक ने व्यापारी से कहा। लाचार होकर व्यापारी अपनी तिजोरी के साथ राजमहल में गया। वहाँ पर नगर रक्षक ने व्यापारी को एक कमरे में बिठाया।

इस बीच सारे नगर में ढिंढोरा पिटवा दिया गया–"अमुक व्यापारी के पास जो लोग अपने गहने गिरवी रख कर वापस ले चुके हैं, वे सब उन गहनों के साथ राजमहल में आये।" यह ढिंढोरा सुनकर बहुत से लोग आ पहुँचे।

उन में अधिकांश लोगों के पास नकली गहने थे। उनके असली गहने तो तिजोरी में मिल गये। उस तिजोरी में जयंत की मोतियों की माला भी मिली।

राजा ने जयंत और बाक़ी लोगों को भी अपने अपने असली गहने वापस दिलाये और व्यापारी को कारागार की सजा दी।

अलीबाबा-चालीस चोर

[३]

मर्जीना तहखाने में लौट आयी, शव को स्नान कराया। धूप करके खुशबूदार तेल मल दिया, तब अलीबाबा की मदद से शव पर कफन लपेटा और शव-पेटिका खरीद लाने बाहर गयी।

थोड़ी देर बाद शव-पेटिका में शव को लिटाकर उस पर मोटे दुपट्टे ओढ़े गये। मसजिद से इमाम तथा अन्य बुजुर्गों को बुलाया गया। अड़ोस-पड़ोस के चार आदमी जनाजा ढो रहे थे। जनाजे के आगे इमाम और उसके पीछे क़ुरान पढ़नेवाले और उनके भी पीछे मर्जीना सर पीटते चल रही थी। जनाजे के पीछे अलीबाबा और उसके दोस्त भी चल रहे थे। अलीबाबा की औरत, उसकी भाभी और उनका परामर्श करने आयी हुई औरतें रोते हुए घर पर ही रह गयीं। इस तरह कासिम की अत्येंष्टिक्रियाएँ समाप्त हुई जिससे किसी को संदेह न हो।

एक महीने बाद चालीस चोरों ने अपनी गुफा को लौटकर देखा। भीतर कासिम के शव के टुकड़े न थे। चोरों के सरदार ने गंभीरता पूर्वक सोचकर कहा–"भाइयो, हमारा रहस्य प्रकट हो गया है। हमने जिस आदमी को मारा, उसका कोई अनुचर है। उसको भी हमें मार डालना होगा, वरना कई पीढ़ियों से हमारे पुरखों ने जो संपत्ति कमाकर रखी और हमने जिसे बढ़ाया, वह धन हमारे हाथ न लगेगा। इसलिए अब हमें करना यह है कि हममें से जो व्यक्ति बड़ा अक़्लमंद है, वह साधु का वेष धरकर उस शव का पता लगावे। हमारा रहस्य प्रकट न हो, इसलिए जो व्यक्ति शव का पता लगाने में असफल होगा, उसे हम मृत्यु-दण्ड देंगे।"

अरब की लोककथा
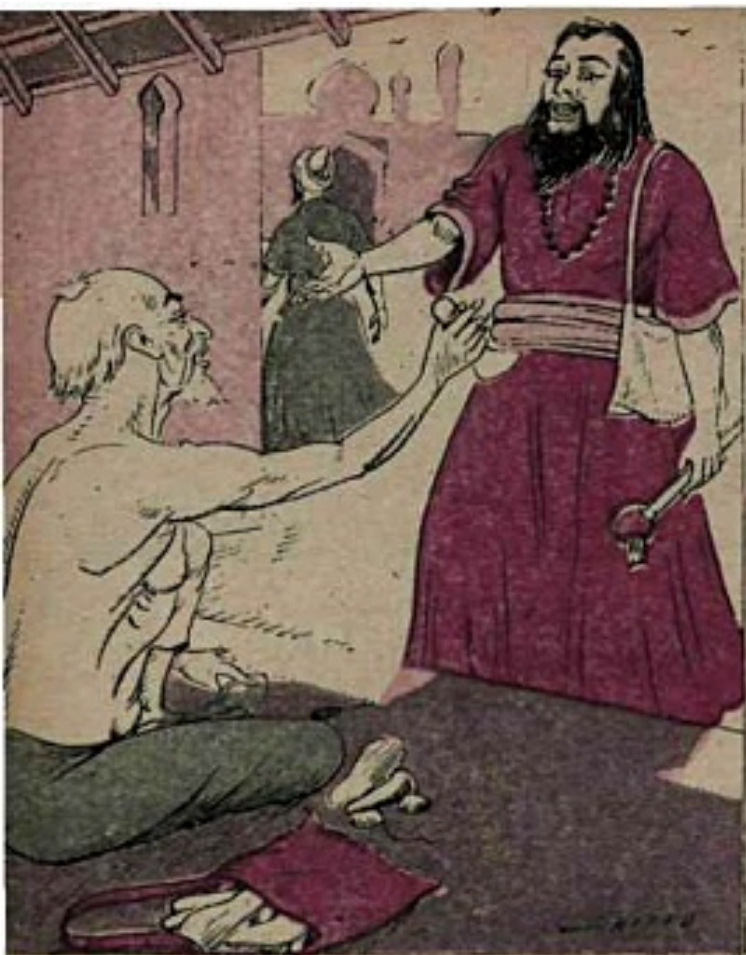
अपने सरदार की बातें सुनकर सब डर गये, मगर एक चोर उस शव का पता लगाने का निश्चय करके आगे आया। सब ने उसकी हिम्मत की तारीफ़ की।

वह चोर साधु का वेश धरकर एक दिन सवेरे ही शहर में आ पहुँचा। दूकानें तो खुली न थीं, मगर मुस्तफ़ा अपने घर के सामने बैठे चप्पल-सी रहा था। उसने सर उठाकर देखा तो उसी की ओर बढ़ते एक साधु दिखाई दिया।

"अरे भाई, इस उम्र में भी तुम्हारी आँखें साफ़ दीखती हैं और तुम्हारे हाथ कांपते नहीं, यह कैसे अचरज की बात है?" नक़ली साधु ने कहा।

"यह तो अल्लाह की मेहर्बानी है साधु-महाराज! मैं अब भी बिना किसी तक़लीफ़ के सूई के छेद में धागा चढ़ा सकता हूँ। गहरे अंधेरे में भी छे टुकड़ोंवाले शव को मिलाकर सी सकता हूँ।" मुस्तफ़ा ने कहा।

साधु ख़ुशी से मन ही मन फूल उठा। उसका काम इतनी सरलता से होगा, इसकी कल्पना तक उसने न की, इसलिए मन में अल्लाह को शुक्रिया अदा किया। मगर प्रकट रूप में आश्चर्य के साथ बोला—"अरे भाई, शव के छे टुकड़े क्या हैं? क्या इस देश का रिवाज है कि शव के छे टुकड़े करके फिर से सी दे? क्यों ऐसा करते हैं?"

मुस्तफ़ा ने हँसकर जवाब दिया—"ऐसा कोई रिवाज़ नहीं है। मैं जो यह रहस्य जानता हूँ, इसे बता नहीं सकता। अलावा इसके सबेरे सबेरे मेरी याद भी कमज़ोर होती है!"

नक़ली साधु ठठाकर हँस पड़ा और बोला—"वाह, तुम भी बड़े विचित्र आदमी निकले? मैं दूसरों के रहस्य जानकर क्या करूँगा? मगर तुम बुरा न समझो तो यह नया आदमी यह सब क्यों पूछताछ कर रहा है, मुझे वह घर दिखा सकते हो जिसमें तुमने शव के छे टुकड़े सी दिये?"

इन शब्दों के साथ साधु ने मुस्तफ़ा के हाथ में सोने का एक दीनार रखा।

"साधु महाराज, मैं उस घर को कैसे जानूं? कोई लड़की मेरी आँखों पर पट्टी बांध कर मुझे ले गयी। उसके बारे में भी मैं कुछ ज्यादा नहीं जानता। मगर मेरी आँखों पर पट्टी बांध कर ले जाओगे तो शायद मुझे उस घर का पता लग जाय।"

"अरे भाई, ऐसा कहो, फिर क्या है? मिनटों में पता लगायेंगे।" साधु ने कहा।

अपनी तारीफ़ सुनकर मुस्तफ़ा फूला न समाया। अपनी आँखों पर पट्टी बंधवा कर रास्ता टटोल्ते साधु को अलीबाबा के घर तक ले गया और बोला—"इसमें कोई शक नहीं, यही वह घर है। इन गधों की बदबू को मैं पहचान पाया। इस खूंटे से टकराकर मुझे चोट भी आ गयी थी।"

साधु बहुत खुश हुआ। उसने मुस्तफ़ा की आँखों पर से पट्टी खोल दी। उसके हाथ में एक और दीनार रखा। तब अलीबाबा के घर के किवाड़ पर चूने से चिह्न लगाया। मुस्तफ़ा अपनी दूकान की ओर चला तो साधु जंगल की ओर।

इसके थोड़ी देर बाद मर्जीना दूकान में कुछ खरीदने के ख्याल से बाहर आयी। किवाड़ पर निशान देख उसने सोचा— "यह निशान तो मैंने नहीं बनाया। किसी दुश्मन ने बनाया होगा। उसे चकमा देना है।" यह सोचकर उस गली के हर एक घर के किवाड़ पर चूने से निशान

बनाये। तब बोली–"तेरी आँख में मेरी उंगली!" कहा जाता है कि ऐसा कहने पर मंत्र-तंत्र असर नहीं करते।

दूसरे दिन वे सब चोर दो-दो करके शहर में पहुँचे। उनके जासूस ने जिस घर पर निशाना लगाया था, उसकी खोज़ करने लगे। पर गली के प्रत्येक घर पर उस निशाने को देख वे चकित रह गये। अगर वे सब गली में खोज़-खबर करते रहेंगे तो लोग उन पर संदेह करेंगे। इस कारण से चोरों के सरदार ने सबको जंगल में भेज दिया। वहाँ पर जासूस की तहक़ीकात की गयी और उसे मौत की सज़ा देकर उसका सर काट दिया गया।

अपने रहस्य का पता लगानेवाले पर चोरों का क्रोध और भड़क उठा। दूसरे दिन अपने दुश्मन का पता लगाने एक और चोर निकल पड़ा। उसने भी मुस्तफ़ा की मदद से अलीबाबा के घर का पता लगाया। उसके घर पर एक जगह एक लाल चिह्न लगाकर गुफा को लौट आया। पर मर्जीना ने उस चिह्न का भी पता लगाया और उस गली के सभी घरों के किवाड़ों पर लाल चिह्न लगाये। इसलिए चोर जब दल बांधकर शहर में आये तब अपने दुश्मन के घर का पता न लगा सके। जंगल में लौटने पर दूसरे जासूस का सर काटा गया।

चोरों के सरदार ने सोचा कि मेरे खुद जाने पर ही काम बन सकता है। उसने भी मुस्तफ़ा की मदद से अलीबाबा के घर का पता लगाया। पर उसने उस घर पर कोई चिह्न नहीं लगाया, बल्कि उसे ध्यान से देखकर चला गया। उसने गुफा में लौटकर बचे हुए सैंतीस चोरों से कहा–"मुझे अपने दुश्मन का घर अच्छी तरह से मालूम हो गया है। उसे उचित दण्ड देने का उपाय मैंने सोच रखा है। तुम लोग चौड़े मुँहवाले अड़तीस कूंडे लेते आओ। उनमें से एक में तेल भर दो और बाक़ी खाली रखो।"

चोरों ने बाजार जाकर कूंड़े खरीदें। अपने सरदार के कहने पर सैंतीस चोर सैंतीस कूंडों में घुसकर बैठ गये। सरदार ने हर एक के हाथ में एक तलवार और एक लाठी दे दी। सब कूंड़ों के बाहर इधर-उधर तेल छिड़क दिया गया। सब कूंड़ों के मुंह खजूर के रेशे से बांध दिये गये। तब एक एक घोड़े पर दो-दो कूंड़े बांधकर उन घोड़ों को हांकते चोरों का सरदार शहर की ओर चल पड़ा।

अंधेरे के फैलते-फैलते सरदार अलीबाबा के घर पहुँचा। उसे दर्वाज़ा खटखटाने की जरूरत न पड़ी। क्यों कि अलीबाबा दर्वाज़े पर खड़ा मिला।

चोरों के सरदार ने घोड़ों को रोक दिया और बड़ी अदब के साथ अलीबाबा से बोला–"मालिक, मैं तो आपका गुलाम तेल का व्यापारी हूँ। मेरे लिए यह शहर बिलकुल नया है। मुझे आज रात को अपने घर के अहाते में ठहरने की इजाज़त देंगे?"

अलीबाबा तो अपनी गरीबी को भूला न था। उसने चोरों के सरदार से कहा–"भाई व्यापारी, मेरे घर में आ जाओ। आज रात भर यहाँ आराम कर सकते हो।" इन शब्दों के साथ व्यापारी को अपने घर के आंगन में ले गया। मर्जीना और एक और गुलाम को बुलाकर बोला–

"कूंड़ों को उतारने में इनकी मदद करो। घोड़ों को कुलथी डाल दो।"

सभी कूंड़ों को अहाते के पिछवाड़े में करीने से रखा गया। घोड़ों को दीवार से सटाकर बांध दिया और उन्हें कुलथी दी गयी। अलीबाबा चोरों के सरदार को बिलकुल पहचान न पाया। इसलिए भीतर ले जाकर आदर के साथ बिठाया। अपनी पंक्ति में खाना खिलाया। तब अपने मेहमान से बोला–"भाई साहब, आप इस घर को अपना समझिये।" इसके बाद अलीबाबा जाकर लेट गया।

चोरों का सरदार किसी बहाने पिछवाड़े में गया और हर एक कूंड़े के पास

जाकर बोला—"मैं जब पत्थर फेंकूंगा तब उठकर चले आओ। आज रात को सबके सर काटने हैं।" इस प्रकार गुप्त रूप में कहकर सरदार घर के अन्दर आया। मर्जीना दिया लेकर आयी और उसे सोने के कमरे में ले गयी। चोरों का सरदार जल्द ही खुर्राटे लेते सो गया।

मर्जीना थालियाँ और बर्तन साफ़ कर ही रही थी कि दिया बुझ गया। उस दिन वह तेल खरीद लाना भूल गयी थी। उसने अब्दुल्ला नामक गुलाम को बुलाकर कहा—"अरे, घर में तेल चुक गया है। क्या करे?"

अब्दुल्ला हँसकर बोला—"पिछवाड़े में अड़तीस कूंड़ों में एक नंबर का तेल है। तुम कहती हो, तेल नहीं है! अपने को बड़ी अक़लमंद और समझदार मानती हो?" मर्जीना का मजाक़ उड़ाकर अब्दुल्ला सोने के लिए चला गया।

एक लोटा लेकर मर्जीना पिछवाड़े में गयी और कूंड़े पर का खजूर का रेशा हटाकर लोटा भीतर डुबोया। मगर तेल की जगह कोई कड़ा पदार्थ लोटे से लग गया। भीतर बैठा आदमी यह कहते उठ खड़ा हुआ—'क्या वक़्त हो गया?'

भयंकर दाढ़ी के साथ कूंड़े से बाहर निकलते देख कोई दूसरी औरत होती तो चीख उठती, मगर मर्जीना ने उसे देखते ही मन में सोचा—'मर गयी।' मगर दूसरे ही क्षण वह संभल कर बोली—"अभी नहीं, तुम्हारा मालिक सो रहा है। थोड़ी देर और ठहर जाओ।"

मर्जीना को सारी हालत मालूम हो गयी। वह हर एक कूंड़े के पास जाकर बोली—'अभी वक़्त नहीं हुआ, थोड़ा और ठहर जाओ।' इसके बाद कूंड़ों में बैठे सैंतीस लोगों को उसने गिना और आखिरी कूंड़े से तेल निकाला। घर में लौटकर दिया जलाया और खतरे से बचने का उपाय सोचने लगी।

[अगले अंक में समाप्त]

सच्चा ज्योतिष

एक गाँव में एक ज्योतिषी था। उसका अपना कोई न था। इसलिए वह उस गाँव के भोले लोगों को ज्योतिष बताकर कुछ कमाता, शादी-ब्याह, गृह-प्रवेश, यात्रा, शुभ कार्य इत्यादि के लिए मुहूर्त या लग्न शोधकर बताता, जो कुछ मिलता, अपना पेट चलाता था। वास्तव में वह ज्योतिष आच्छा न जानता था। लेकिन वह जो कुछ बताता, वह कभी न कभी सच निकलता। इसलिए उसके ज्योतिप पर गाँव के कई लोगों का विश्वास जम गया।

एक दिन सोमशास्त्री नामक एक ब्राह्मण ने ज्योतिषी से मिलकर पूछा– "आज मेरा भाग्य कैसा है?"

ज्योतिषी ने कहा–"थोड़ा सावधान रहिये। दूसरों की बातें सुनने पर आपको नुक़सान होने की संभावना है।"

सोमशास्त्री घर लौट गया। थोड़ी देर बाद रामशास्त्री नामक एक और ब्राह्मण सोमशास्त्री के घर आकर बोला–"निकलो तो सही, पड़ोसी गाँव में दावत और दान दोनों हाथ लगेंगे। जल्दी करो।"

सोमशास्त्री को ज्योतिषी की बात याद आयी कि दूसरों की बातें सुनने पर नुक़सान होगा। उस दिन सोमशास्त्री के गाँव में ही पटवारी के घर व्रत चल रहा था। यदि रामशास्त्री की बात मानकर पड़ोसी गाँव चले जावे तो व्रत का फल भी जाता रहेगा और वहाँ भी कुछ हाथ न लगेगा। ज्योतिषी के कहे मुताबिक़ नुक़सान पहुँच सकता है। यह सोचकर सोमशास्त्री ने रामशास्त्री से कहा– "आज मैं नहीं आऊँगा।"

रामशास्त्री अकेले दौड़े दौड़े पड़ोसी गाँव गया।

जनार्दन राय

सोमशास्त्री ने पटवारी के घर जाकर व्रत कराया, चार आने की दक्षिणा और तांबूल लेकर घर लौटा।

शाम को पड़ोसी गाँव से लौटकर रामशास्त्री ने कहा—"अरे तुम मेरे बुलाने पर भी नहीं आये। पड़ोसी गाँव के अमीर के घर बढ़िया दावत थी। सभी ब्राह्मणों को उसने एक एक रुपया दक्षिणा दी, और नये वस्त्र भी दिये।"

सोमशास्त्री को बड़ा पछतावा हुआ। उसने सोचा कि ज्योतिषी की बात न मानकर रामशास्त्री के साथ जाता तो दक्षिणा और नये वस्त्र मिलते। ज्योतिषी ने उसे धोखा दिया। सोमशास्त्री क्रोध में आकर पटेल के घर गया और शिकायत की—"आप हमारे गाँव के ज्योतिषी को तुरंत इस गाँव से भगा दीजिये। वह जो कुछ ज्योतिष बताता है, सब झूठ है। उसकी बातें सुनने पर मुझे बड़ा नुक़सान हुआ।" इसके बाद उसने सारी कहानी सुनायी।

पटेल ने ज्योतिषी को बुलाकर पूछा—"तुमने ऐसा ज्योतिष क्यों बताया? सुनता हूँ कि तुम्हारी बात पर यक़ीन करने से सोमशास्त्री को बड़ा नुक़सान उठाना पड़ा है?"

ज्योतिषी पलभर के लिए घबरा गया, तब अपनी बातों को याद कर बोला—मैं ने कोई झूठी बात नहीं कही, साहब! मैंने यही बताया कि दूसरों की बातें सुनने पर नुक़सान उठाना पड़ेगा। आज इस ब्राह्मण का भाग्य यही था और हुआ भी यही। इसमें मेरा क्या दोष है?"

"तुम्हारी बात मान कर सोमशास्त्री रामशास्त्री के साथ नहीं गया! तब तुम्हारी बात सच कैसे निकली?" पटेल ने पूछा।

"दूसरों की बातों का मतलब केवल रामशास्त्री की बातें ही होती हैं? मैं ने जो बातें बतायीं, ये भी तो दूसरों की ही बातें हैं? भाग्य को कौन बदल सकता है, जी?" ज्योतिषी ने कहा।

ये बातें सुनने पर सोमशास्त्री का चेहरा सफ़ेद पड़ गया और वह चुपचाप अपने घर चला गया।

बड़े घर की दावत

एक गाँव में एक जमींदार था। वह बड़ा धनी था। साथ ही बड़ा घमण्ड़ी भी था। उस गाँव में अमीरों के घर बहुत ही कम थे। बाक़ी लोग किसान और अन्य पेशेवर थे। जमीन्दार उन लोगों से चिढ़ा करता था। उनकी हवा लगने पर खीझकर कहता–"ये लोग बड़े ही गंदे हैं।" जमीन्दार के सौ गज दूरी पर भी खड़े होने की हिम्मत कोई नहीं रखता था।

एक दिन खेत में किसान यह कह कर डींग मार रहे थे–"आज मैं ने जमीन्दार को इतनी दूरी पर से देखा, उतनी दूरी से मैं ने देखा।" तब एक गरीब किसान ठठाकर हँस पड़ा और बोला–"अरे भाई, किसी पेड़ या दीवार की आड़ में से जमीन्दार को देखना कोई बड़ी बात है? अगर मैं चाहूँ तो जमीन्दार के घर दावत खा सकता हूँ। चाहो तो दाँव लगाकर देखो तो सही!"

ये बातें सुनने पर बाक़ी किसानों को बड़ा गुस्सा आया।

"अरे, तुम्हारा चेहरा जमीन्दार के घर दावत खाने लायक़ है? तुमको जमीन्दार अपने घर के फाटक के भीतर भी क़दम रखने न देगा। तुमको उठाकर गंदे गड्ढे में फेंक देगा! डींगा मत मारो। क्या तुमने हम सबको बेवकूफ़ समझ रखा है?" सबने झिड़कियाँ दीं।

"मुझे डींग मारने की क्या ज़रूरत है? जो बात थी, मैंने कही। मैं चाहूँ तो किसी भी वक़्त जमीन्दार के घर जाकर खाना खा सकता हूँ।" गरीब किसान ने जवाब दिया।

"अगर तुम यह काम करोगे तो तुमको साठ सेर अनाज और एक जोड़े बैल देंगे।

सुधा कुमारी

यदि तुम जमीन्दार के घर खाना न खा सकोगे तो हम जो भी काम देंगे, तुमको करना पड़ेगा। सोचकर जवाब दो।" किसानों ने चुनौती दी।

"मुझे तुम लोगों की शर्त मंजूर है।" गरीब किसान ने जवाब दिया।

उसी दिन वह गरीब किसान जमीन्दार के घर गया। पहरेदारों ने उसे भगाने की कोशिश की।

"थोड़ा ठहर जाओ। मुझे सरकार को एक शुभ समाचार सुनाना है।" गरीब किसान ने कहा।

"अरे, वह बात हम से बता दो। हम हुजूर को सुनायेंगे।" पहरेदारों ने कहा।

"यह शुभ समाचार सरकार से मुझे खुद कहना है। यह बात मैं तुम लोगों से कह नहीं सकता।" किसान ने जवाब दिया।

पहरेदारों ने जमीन्दार के पास जाकर किसान की बात बता दी। जमीन्दार के मन में यह कुतूहल पैदा हुआ कि वह शुभ समाचार जल्दी जान ले। यह किसान कोई फ़ायदे का समाचार सुनाने आया है। सब की तरह याचना करने नहीं, इसलिए जमीन्दार ने पहरेदारों को आदेश दिया कि किसान को हाजिर करे।

पहरेदारों ने किसान को जमीन्दार के सामने हाजिर किया।

"तुम कैसा शुभ समाचार सुनाना चाहते हो?" जमीन्दार ने किसान से पूछा।

"आप से मैं एकांत में ही बता सकता हूँ।" किसान ने जवाब दिया।

जमीन्दार का कुतूहल और बढ़ गया। उसने अपने पहरेदारों को बाहर जाने का आदेश दिया।

किसान ने गुप्त रूप से कहा—"सरकार, घोड़े के सर के बराबर सोने का क्या दाम होगा?"

"अरे, तुम यह बात किसलिए पूछते हो?" जमीन्दार ने पूछा।

"प्रभू! एक जरूरी काम से पूछ रहा हूँ। अगर आप जानते हैं तो बता दीजिये।" किसान ने कहा।

"अरे, वही काम बता दो।" जमीन्दार ने पूछा।

किसान ने गहरी साँस लेकर कहा—"आप नहीं कहना चाहेंगे तो मैं क्या करूँ? आप की आज्ञा हो तो घर जाकर खाना खाकर लौटता हूँ। पेट में चूहे दौड़ रहे हैं।"

जमीन्दार को उसे भेजने की इच्छा न हुई। घोड़े के सर के बराबर का सोना वह हाथ से निकल जाने नहीं देना चाहता था। इसलिए नौकरों को बुलाकर कहा—"इसे ले जाकर भर पेट खाना खिलाओ।"

किसान भर पेट खाना खाकर लौटा तो जमीन्दार ने उस से पूछा—"तुम सोने की बात कहते हो, उसे ले आओ। तुम से अच्छा मैं सोने के बारे में जानता हूँ। तुमको पुरस्कार भी दूंगा।"

"सोना? मेरे पास सोना कहाँ है सरकार? मैं आप से पूछकर यह जानना चाहता था कि साठ सेर अनाज और एक जोड़े बैल घोड़े के सर के बराबर सोने के समान होगा कि नहीं।" किसान ने कहा।

इस पर जमीन्दार क्रोध में आकर बोला—"कमबख्त, एक पल भी तुम यहाँ रहोगे तो तुमको मरवा डालूंगा।"

किसान चला गया और अपना दाँव जीत लिया। उसे साठ सेर अनाज और एक जोड़ा बैल यूँ ही मिल गये।

सबसे नहीं बनता!

खेतों में दाँवने का वक्त निकट आया था। दो योगी एक गाँव में पहुँचे। एक अमीर को देख बोले–"साहब, आज रात को हमें खाना देकर अपने घर सोने की जगह दीजिये।"

"मैं आलसियों को दान नहीं देता। रात को अपने घर तुम्हें खाना देकर सोने की जगह देता हूँ, पर सवेरे उठकर तुम लोग हमारे खेत के धान के ढेरों में से एक को दाँवकर तब चले जाओ।" अमीर ने शर्त लगायी।

"यह कौन बड़ी बात है? एक ढेर हमें सौंप दीजिये, दाँवकर चलेंगे।" योगियों ने बताया।

सवेरा होने पर भी योगियों के न जागते देख अमीर ने उन्हें जगाया और कहा–"तुम लोग बड़े आलसी मालूम होते हो। उठ जाओ।"

"धान को दाँवना कौन बड़ा काम है?" ये शब्द कहते दोनों योगी एक मशाल लेकर खेत की ओर चल पड़े। अमीर उनके पीछे जाकर रोकने की कोशिश करने लगा, मगर योगियों ने उसकी परवाह न की और धान के ढेर के चारों तरफ़ आग लगा दी। पलभर में सारा ढेर जल उठा और बुझ गया। अमीर ने देखा कि धान और फूस अलग अलग हो गये हैं। तब योगी अपने रास्ते चले गये।

"ओह, इसका रहस्य यह है।" यह सोचकर अमीर ने उसी मशाल से सभी ढेरों में आग लगायी। मगर सब जलकर राख हो गये।

होशियार लोग

एक गरीब आदमी के तीन बेटे थे।

उसने अपने बेटों को बुलाकर समझाया–"बेटे, हमारे लिए कोई जमीन-जायदाद नहीं है। न गाय-भैंस ही। इसलिए तुम लोग होशियार बनो। सूक्ष्म बुद्धि पैदा करो। मेरे ख्याल से होशियार लोग किसी न किसी तरह जी सकेंगे।"

अपने पिता के उपदेश पाकर तीनों बेटे होशियार बने। कुछ दिन बाद उनका पिता मर गया। बेटों ने सोचा कि देशाटन करके अपनी अक्लमंदी का परिचय देकर कहीं न कहीं नौकरी प्राप्त करे। यह सोचकर वे लोग अपने गाँव से निकल पड़े।

तीनों ने कई दिनों तक यात्रा की। आखिर जब वे शहर के निकट पहुँच रहे थे, तब बड़ा भाई रुका और बोला–"थोड़ी देर पहले इधर से एक बड़ा ऊँट चला गया है।"

दूसरे भाई ने रास्ते के दोनों ओर देख कहा–"उस ऊँट की एक आँख दिखाई नहीं देती!"

उनके थोड़ी दूर आगे बढ़ने पर तीसरे भाई ने कहा–"उस ऊँट पर एक औरत और एक बच्चा है।" बाक़ी दोनों भाईयों ने कहा–"तुम्हारा कहना सही है।"

तीनों भाई आगे बढ़कर चल ही रहे थे कि तभी एक आदमी घोड़े पर सवार हो उधर से आ निकला। बड़े भाई ने पूछा–"लगता है कि तुम कुछ ढूंढ रहे हो?"

"जी हाँ।" घुड़सवार ने जवाब दिया।

"ऊँट की तो खोज नहीं कर रहे हो?" बड़े ने पूछा।

"जी हाँ!" घुड़सवार ने कहा।

"वह बहुत बड़ा ऊँट है न?" बड़े ने फिर पूछा।

"जी हाँ!" घुड़सवार ने जवाब दिया।

विमल कुमारी

"उसकी बायीं आँख अंधी है न?" दूसरे भाई ने पूछा।

"जी हां, तुम ठीक कहते हो।" घुड़सवार ने कहा।

"उस प्रर एक औरत और एक बच्चा है न?" तीसरे भाई ने पूछा।

घुड़सवार ने उन भाइयों की ओर शंका भरी दृष्टि से देखा और पूछा—"लगता है कि तुम लोगों ने मेरे ऊँट को चुराया है। बताओ, क्या किया?"

"अरे भाई, हमने तुम्हारे ऊँट को देखा तक नहीं।" तीनों ने जवाब दिया।

"तब तो तुम लोगों को ये सारी बातें कैसे मालूम हुई?" घुड़सवार ने पूछा।

"अपनी आँखें और अक़्ल का उपयोग करें तो बहुत सारी बातें मालूम हो जाती हैं। तुम उस दिशा में जाओगे तो तुम्हारा ऊँट दिखाई देगा।" तीनों भाइयों ने जवाब दिया।

"मैं किसी भी दिशा में नहीं जाऊँगा। तुम लोगों ने मेरे ऊँट को हड़प लिया। मुझे वापस कर दो।" घुड़सवार ने पूछा।

"अरे भाई, हम करते हैं कि हमने तुम्हारे ऊँट तक को नहीं देखा है।" तीनों ने एक स्वर में जवाब दिया।

घुड़सवार ने तलवार निकाल कर तीनों भाइयों को धमकाया, तब उनको उस शहर के बादशाह के पास ले जाकर शिकायत की—"जहाँपनाह, मैं अपने ऊँटों को हांक ले जा रहा था। मेरी पत्नी और पुत्र मेरे साथ एक ऊँट पर निकल पड़े। किसी कारण से वे पीछे रह गये और रास्ता भटक गये। मैं उनकी खोज में निकला तो ये तीनों पैदल चलते मुझे दिखाई दिये। मेरा संदेह है कि इन लोगों ने मेरे ऊँट को चुराया और मेरी पत्नी और पुत्र को मार डाला है।"

"तुम्हारे संदेह का सबूत क्या है?" बादशाह ने पूछा।

"मेरे कुछ पूछे बगैर इन लोगों ने बताया कि मेरा ऊँट बड़ा है, काना है और

उस पर एक औरत तथा एक बच्चा है ।" घुड़सवार ने कहा ।

"इसमें कोई संदेह नहीं, ये लोग चोर हैं ।" ये शब्द कहकर बादशाह ने उन भाइयों की ओर मुड़कर पूछा--"बताओ, तुम लोगों ने ऊँट को क्या किया ?"

"जहाँपनाह, हम लोग चोर नहीं, न इसके ऊँट को ही देखा है ।" तीनों ने उत्तर दिया ।

"तुम लोगों ने उस ऊँट का सारा हुलिया बताया और कहते हो कि तुम लोग चोर नहीं ?" बादशाह ने गरज कर पूछा ।

"जहाँपनाह, इसमें कोई अचरज की बात नहीं है । बचपन से ही हम लोग अपनी आँखों का अच्छी तरह से उपयोग करते अनेक विषयों को जानने का अभ्यास करते आ रहे हैं ।" तीनों भाइयों ने कहा ।

बादशाह ने व्यंगपूर्ण हँसी हँसकर कहा--"तुम लोगों ने जब बिलकुल उसे देखा नहीं है तो इस प्रकार हू ब हू बताना कैसे मुमकिन है ?"

"यह मुमकिन है, सरकार ।" तीनों ने कहा ।

"तब तो तुम्हारी इस शक्ति की अभी जाँच करता हूँ ।" ये शब्द कहकर बादशाह ने अपने वज़ीर को बुलाया और गुप्त रूप में उससे कुछ कहा । वज़ीर बाहर चला गया और थोड़ी देर बाद लौट

आया। थोड़ी देर बाद दो नौकर एक पेटी उठा लाये और बादशाह के सामने रखकर हट गये।

"अबे चोरों, अब बताओ, इस पेटी में क्या है?" बादशाह ने उन तीनों भाइयों से पूछा।

बड़े भाई ने कहा—"हुजूर, हमने पहले ही बताया है कि हम चोर नहीं हैं। आपने पूछा, इसलिए बताता हूँ—इस पेटी में एक गोल चीज़ है।"

"वह एक दाड़िम है।" दूसरे ने कहा।

"हां, वह अभी कच्चा है, पका नहीं।" तीसरे ने कहा।

तीनों के कह चुकने के बाद बादशाह ने पेटी खोलकर उस चीज़ को बाहर निकाला। वह वास्तव में एक कच्चा दाड़िम था। उसे देख सभी दरबारी अचरज में आ गये।

इस पर बादशाह ने घुड़सवार से कहा—"ये लोग चोर नहीं, बल्कि अव्वल दर्जे के बुद्धिमान और होशियार हैं। तुम जाकर अपने ऊँट को खोज लो।"

इसके बाद बादशाह ने उन तीनों भाइयों को बढ़िया मिठाइयाँ मंगवा कर दीं, मेहमानदारी करने के बाद पूछा—"अब तुम लोगों पर कोई इलजाम नहीं, और न कोई बंधन है, लेकिन यह बताओ कि उस ऊँट के बारे में तुम लोगों ने सही बातें कैसे जान लीं?"

इस पर बड़े भाई ने कहा—"हमने रास्ते में ऊँट के पैरों के चिह्न देखें, वे चिह्न बड़े थे, इसलिए हमने सोचा कि ऊँट बड़ा होगा। थोड़ी देर बाद घुड़सवार किसी चीज़ को ढूंढते आ रहा था, इस पर हमने सोचा कि वह ऊँट की खोज कर रहा है।"

"यह बात ठीक है, मगर वह ऊँट काना है, यह बात तुम्हें कैसे मालूम हुई?" बादशाह ने पूछा।

इस पर दूसरे भाई ने जवाब दिया—"वह ऊँट रास्ते के बायीं ओर की घास

चरता गया है, दायीं तरफ़ की घास को छुआ तक नहीं।"

"यह भी ठीक है, मगर उस ऊँट पर एक औरत तथा एक बच्चा भी है, यह बात तुमने कैसे जान ली?" बादशाह ने फिर पूछा।

इस पर तीसरे भाई ने कहा—"एक जगह ऊँट अपने अगले पैरों पर बैठा है, उसके बाजू में बालू में एक औरत के पैरों के चिह्न तथा एक बच्चे के चलने के निशान भी हैं।"

"वाह, अद्‌भुत है! मगर पेटी में जो दाड़िम था, उसका पता कैसे लगाया? यहाँ पर तो कोई चिह्न भी तो नहीं हैं?" बादशाह ने पूछा।

इस पर बड़े ने कहा—"नौकरों द्वारा पेटी को उठा लाते हमने समझा कि उस पेटी में कोई भारी चीज़ नहीं है। जब उन लोगों ने पेटी को नीचे रखा, तब भीतर की चीज़ एक ओर से दूसरी ओर लुढ़क गयी। उस आवाज़ को सुनकर हमने समझा कि वह गोल और छोटी-सी चीज़ है।"

"वह पेटी दाड़िम के खेत की ओर से लाई गयी, इसलिए मैंने समझा कि वह छोटी-सी वस्तु और कुछ नहीं, केवल दाड़िम है।" दूसरे ने जवाब दिया।

"यह बात तो जान सकते हैं, मगर वह दाड़िम कच्चा है या पका है, यह तुम कैसे जान गये? यह बात बड़ी विचित्र मालूम होती है?" बादशाह ने पूछा।

इस पर तीसरे ने कहा—"इसमें विचित्र बात क्या है, जहाँपनाह? फलों के पकने का अभी समय नहीं आया है। आप बगीचे में जाकर देखिये, सभी पेड़ों में कच्चे दाड़िम ही दिखायी देंगे।" खिड़की में से दीखनेवाले दाड़िम के बगीचे को दिखाते हुए समझाया।

बादशाह उनकी बुद्धिमता पर खुश होकर बोला—"सचमुच तुम लोगों की बड़ी सूक्ष्म बुद्धि है। तुम जैसे बुद्धिमान और होशियारों की बड़ी आवश्यकता है।" इन शब्दों के साथ उन तीनों भाइयों को अपने दरबार में नौकरी दी।

साहब और चोर

रत्नगिरि का राजा सब तरह के अपराधों को क्षमा कर सकता था, मगर चोरी करनेवालों को बड़ी निर्दयता के साथ सजा देता था। इसलिए उस नगर में चोरियाँ बिलकुल नहीं होती थीं।

मगर एक दिन पहरेदारों ने एक चोर को पकड़ा। राजा ने उस चोर को फाँसी की सजा दी।

फाँसी के तख़्ते पर चढ़ने के पहले चोर ने राजा से कहा–"महाराज, मैं सोना बनाने की विद्या जानता हूँ। मेरे साथ यह विद्या ख़तम हो जाय, इसलिए वह आपको सुनाता हूँ।"

"सोना बनाने की विद्या जानते हुए भी तुमने चोरी क्यों की?" राजा ने चोर से पूछा।

"महाराज, यह मेरी बद क़िस्मती है! यह विद्या उसी के हाथों में सफल होगी जिसने कभी चोरी ही न की हो। जब मैं यह विद्या जान गया हूँ तब से मैं चोर हूँ। इसलिए आप जैसे महानुभावों के लिए यह विद्या लायक़ है।" चोर ने जवाब दिया।

राजा ने सोचकर कहा–"मैंने भी बचपन में खाने-पीने की चीज़ों की चोरी की है।" तब राजा ने मंत्री को बुलाकर कहा–"तुम चोर से वह विद्या सीख लो।" मगर मंत्री ने बताया कि उसने भी बचपन में अपने पिता की जेब से चुट्टे पैसे चुराये हैं।

इस के बाद राजा ने अपने सभी दरबारियों से पूछा, पर सब ने यही बताया कि कभी न कभी सबने चोरी की है। इसपर राजा की आँखें खुलीं। चोर को आसानी सजा देकर उस दिन से कड़ी सजा देना बंद किया।
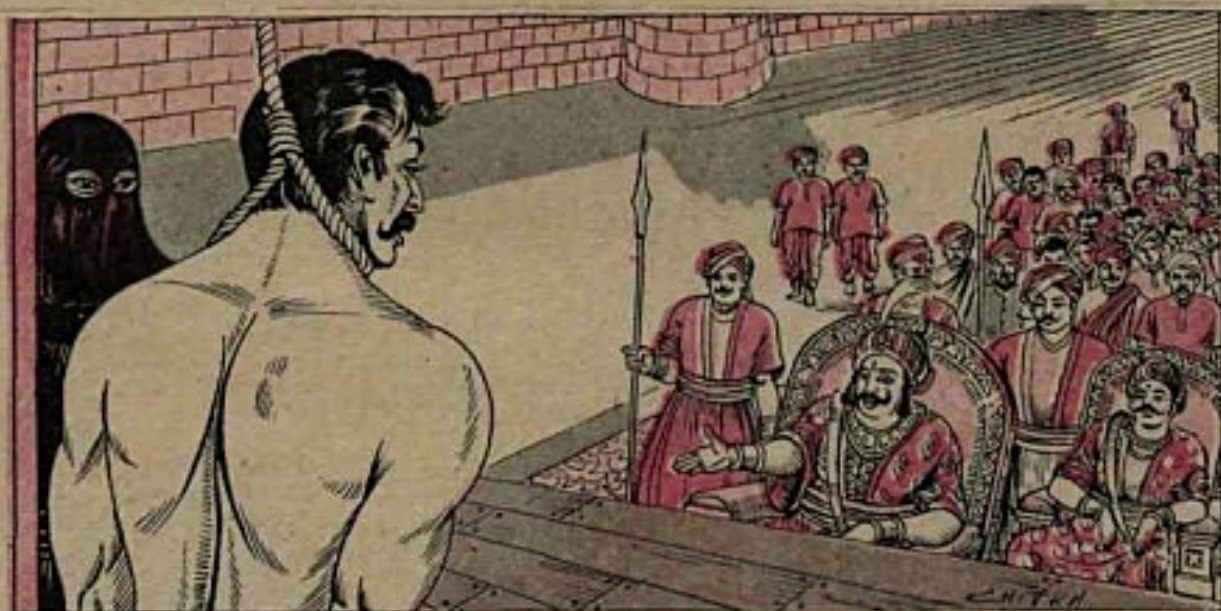
युधिष्ठिर द्रौपदी को भी जुए में खो बैठे। अब उनके पास कुछ बचा न रहा। दुर्योधन चिल्ला उठा–"द्रौपादी को बुला लाओ।"

विदुर का क्रोध भड़क उठा। उसने दुर्योधन से कहा–"मूर्ख, तुम होश में नहीं हो। पांडवों को क्रोध दिलाना जहरीले सांपों को भड़काने के समान होगा। द्रौपदी तुम्हारी दासी कैसे बन सकती है? युधिष्ठिर अपनी स्वतंत्रता को खोने के बाद ही द्रौपदी को दाँव पर लगा सके!" फिर विदुर ने सभा के सदस्यों की ओर देख कहा–"यह दुर्योधन मूर्ख है। मेरी बात यह नहीं मानेगा। शीघ्र ही कौरवों का विनाश होने जा रहा है।"

दुर्योधन ने विदुर की बातों पर बिलकुल ध्यान न दिया। उसने प्रातिकामी नामक व्यक्ति को बुलाकर आदेश दिया–"तुम शीघ्र अंत:पुर में जाकर द्रौपदी को बुला लाओ। इन पांडवों को देख तुमको डरने की कोई आवश्यकता नहीं।"

दुर्योधन का आदेश पाकर प्रातिकामी पांडवों के निवास में पहुँचा और बोला–"द्रौपदी जी, तुमको युधिष्ठिर जुएँ में दाँव पर लगाकर हार गये हैं। इसलिए तुम दुर्योधन की दासी हो। धृतराष्ट्र ने तुमको बुला लाने का आदेश दिया है।"

"अरे कोई भी क्षत्रिय जुएँ में अपनी पत्नी को दाँव पर लगाता है? क्या

युधिष्ठिर का मतिभ्रमण तो नहीं हुआ? सच्ची हालत तो बताओ, आखिर क्या हुआ है?" द्रौपदी ने पूछा ।

"युधिष्ठिर जब जुएँ में अपना सर्वस्व खो बैठे तब दाँव पर रखने को उनके पास कुछ बच न रहा। इसके बाद अपने को, अपने भाइयों तथा आप को भी दाँव पर लगा कर सब को हार बैठे।" प्रातिकामी ने समझाया ।

"सुनो, तुम सभा भवन में जाकर इस बात का पता लगा लाओ कि युधिष्ठिर ने पहले अपने को जुएँ में हार कर मुझे दाँव पर रखा या मुझे हारने के बाद अपने को हार बैठे?" द्रौपदी ने पूछा ।

प्रातिकामी सभाभवन में लौटा और द्रौपदी का प्रश्न सुनाया । यह बात सुनकर युधिष्ठिर को बड़ा दुख हुआ। वे मौन रह गये । इस पर दुर्योधन ने प्रातिकामी से कहा–"द्रौपदी से कह दो कि वह सभा में आकर अपने संदेह का निवारण करे।"

प्रातिकामी ने पुनः द्रौपदी के पास जाकर कहा–"सभासदों का कहना है, कि आप स्वयं सभा में प्रवेश करके अपने संदेह का निवारण करे।"

"प्रातिकामी, सभा में मेरा प्रवेश करना उचित नहीं, यह कौरवों के लिए कलंक की बात होगी। मेरे सवाल का जवाब सभा में उपस्थित बुजुर्गों से मांगो। वे जो निर्णय करेंगे, मैं उसका पालन करूँगी।" द्रौपदी ने उत्तर दिया ।

प्रातिकामी ने द्रौपदी का प्रश्न सभा के सम्मुख रखा। दुर्योधन के विरुद्ध कोई कुछ बोल न पाया । यह देख युधिष्ठिर ने द्रौपदी को बुला लाने के लिए प्रातिकामी के साथ एक दूत को भेजा। दूत के द्वारा युधिष्ठिर का संदेशा पाकर रजस्वला होने पर भी द्रौपदी प्रातिकामी के साथ सभाभवन में गयी और धृतराष्ट्र के सामने दूर पर खड़ी हो गयी। पांडव द्रौपदी की ओर मुँह उठाये देख न पाये। इसलिए सर झुकाये विषाद वदनों से बैठे रहें ।

पांडवों की मानसिक दशा को देख दुर्योधन की हिम्मत बढ़ गयी और प्रातिकामी से बोला–"तुम अभी जाकर द्रौपदी को यहाँ पर खींच ले आओ!"

प्रातिकामी को द्रौपदी का स्पर्श करने में डर लगा। उसने सभा में उपस्थित बुजुर्गों से पूछा–"मैं द्रौपदी से क्या कहूँ?"

दुर्योधन ने सोचा कि प्रातिकामी भीम को देख डर रहा है, इसलिए उसने दुश्शासन से कहा–"दुश्शासन, तुम द्रौपदी को खींच लाओ। ये शत्रु हमारे गुलाम हैं। हमारा कुछ बिगाड़ नहीं सकते।"

दुश्शासन मर्यादा का ख्याल रखे बिना द्रौपदी के निकट गया और बोला–"द्रौपदी, मेरे साथ चलो! तुम्हारे सभी पति हमारे हाथों में हार गये हैं। लजाती क्यों हो? हमारे दुर्योधन के साथ प्रेम करो। कौरवों का वरण करो।" इन शब्दों के साथ वह द्रौपदी के और निकट गया। द्रौपदी का चेहरा एकदम सफ़ेद पड़ गया। वह अपने हाथों से मुख को ढाँप कर गांधारी की ओर जाने लगी।

दुश्शासन ने उसका पीछा करते हुए कहा–"अब कहाँ जाओगी?" इन शब्दों के साथ उसने द्रौपदी के केश पकड़ कर खींचा। पाँच महान वीरों की पत्नी हो कर भी अनाथा बनी द्रौपदी थर थर काँपते बोली–"अरे मूर्ख, इस वक़्त मैं रजस्वला हो गयी हूँ। मुझे सभा के सामने मत ले जाओ।"
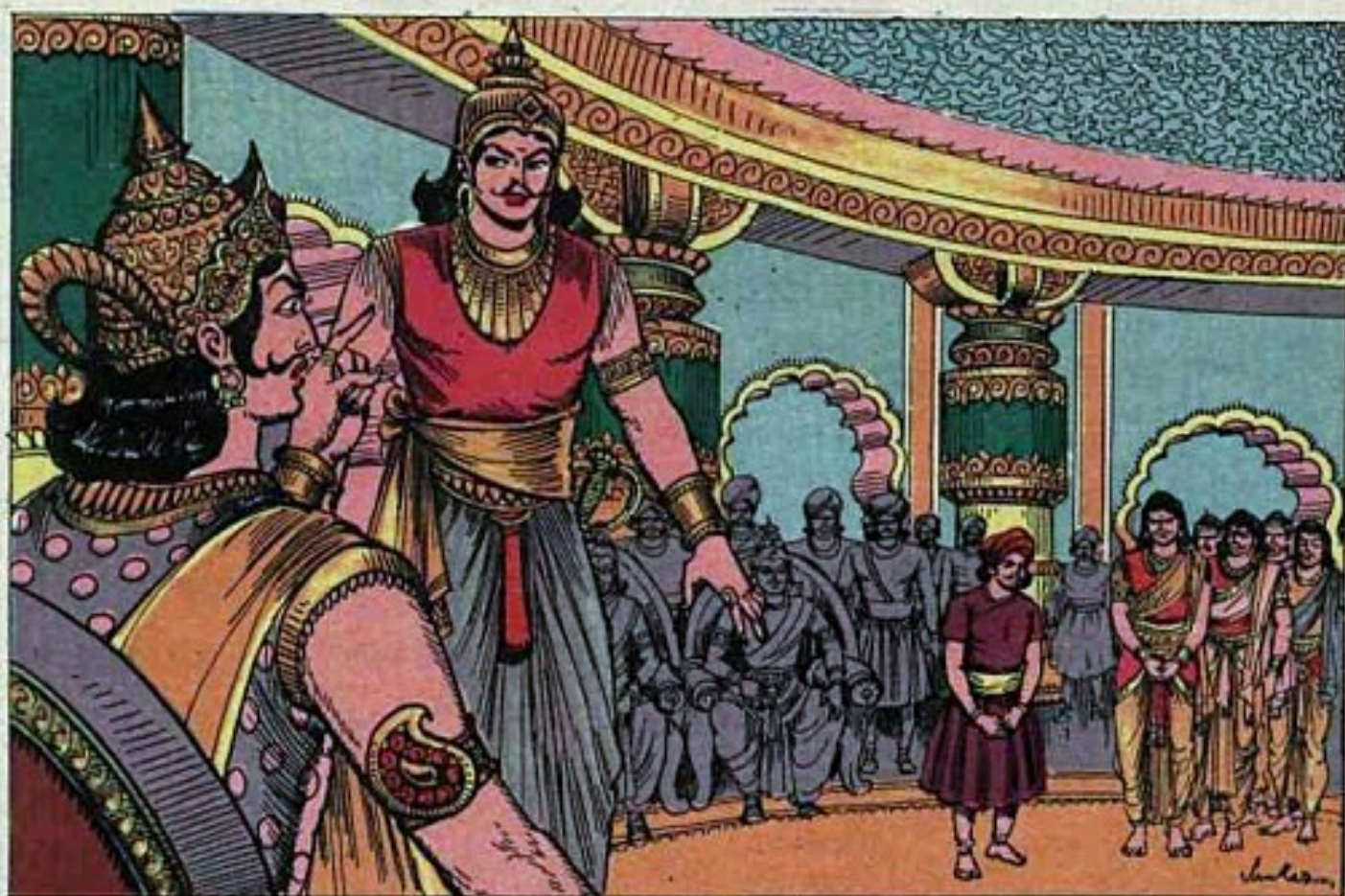
इस पर दुश्शासन ने कहा—"तुम रजस्वला हो या नंगी हो, हमें क्या मतलब? तुम्हारा पति जुएँ में तुमको हार बैठा है। आज से तुम हमारी अन्य दासियों में से एक हो।" ये शब्द कहते द्रौपदी के केश पकड़कर खींचते हुए दुश्शासन सभा के सामने ले आया।

द्रौपदी का जूड़ा खुल गया। उसकी साड़ी खिसकने लगी। लज्जा और क्रोध से वह जलने लगी। उसने कहा—"अरे दुष्ट, पिता जैसे इन बुजुर्गों के सामने मुझे इस प्रकार खड़ा होना नहीं चाहिये। मेरा अपमान न करो। इसका फल तुमको भोगना पड़ेगा। इस सभा के सभी सदस्य धर्म के ज्ञाता हैं, पर कोई भी तुमको डांट नहीं रहे हैं। भरत वंश में कीड़े पड़ गये हैं। लगता है कि इस अन्याय को रोकना भीष्म, द्रोण, विदुर और धृतराष्ट्र के लिए असंभव है!" इन शब्दों के साथ द्रौपदी ने पांडवों की ओर तीक्ष्ण दृष्टि से देखा।

दुश्शासन ने व्यंग्य से कहा—"अरी दासी! बको मत!" ये शब्द सुनकर कर्ण, शकुनी और दुर्योधन ठठाकर हँस पड़े। बाक़ी लोग मन ही मन दुखी होने लगे। तब भीष्म ने द्रौपदी से कहा—"बेटी, धर्म की बातें हम क्या बतावें? पाँच व्यक्तियों की तुम पत्नी हो, इसलिए युधिष्ठिर को तुम्हें दाँव पर लगाना गलत बात थी। लेकिन युधिष्ठिर आपना सर्वस्त्र छोड़ने को तैयार होगा, किंतु धर्म को त्यागने के लिए नहीं। वह जुएँ में तुमको हार कर तुम्हारे प्रति क्या धोखा देगा?"

इसके उत्तर में द्रौपदी ने पूछा—"क्या युधिष्ठिर ने अनिच्छा से जुआ खेल कर धोखा खाकर सर्वस्व खोने के बाद मुझे दाँव पर रखा? पुत्र और पुत्र-वधुओं को नियमानुसार जीविका के साधन देनेवाले कौरव प्रमुख न्याय करें।" इन शब्दों के साथ द्रौपदी रो पड़ी। दुश्शासन ने अशोभनीय बातें कहीं। इस पर भीम ने

युधिष्ठिर से कहा–"जुआखोर अपनी अनीतिपूर्ण पत्नियों को भी दाँव पर नहीं रखते। परम पतिव्रता द्रौपदी को दाँव पर रखना तुम्हारा अपराध है। समस्त ऐश्वर्य और हमको भी खो बैठे, कोई बात नहीं, परंतु द्रौपदी को दाँव पर रखनेवाले तुम्हारे हाथों को जलाना होगा। हे सहदेव, तुम आग ले आओ।"

अर्जुन ने भीम को समझाते हुए कहा–भैया, तुम अब तक शांत रहे, इस वक़्त भाई युधिष्ठिर के मन को क्यों दुखाते हो? इन जुआख़ोरों की वजह से क्या तुम्हारी बुद्धि भी भ्रष्ट हो गयी? बड़े की निंदा की जा सकती है? युधिष्ठिर स्वयं जुआ खेलने नहीं आये। कौरवों के बुलाने पर राजधर्म का पालन करने के लिए जुए में भाग लिया। इसमें युधिष्ठिर का कोई दोष नहीं है। शांत हो जाओ।"

द्रौपदी के प्रश्न का उत्तर सभा में कोई न दे सके। तब धृतराष्ट्र के पुत्रों में एक विकर्ण ने उठकर दृढ़ स्वर में कहा–"द्रौपदी जी के प्रश्न का उत्तर दीजिये। कुरु वृद्ध और आचार्य मौन क्यों हैं? पक्षपात के विना न्याय कीजिये।"

तब भी सभा में सब मौन रहे, फिर विकर्ण ने कहा–"यदि आप न्याय नहीं करेंगे, तो मैं करूँगा। सुनिये, जो राजा

औरत, शिकार, जुआ और मधुपान का दास है, वह धर्म का पक्ष नहीं ले सकता। युधिष्ठिर जुआ रूपी व्यसन के कारण अपने सर्वस्व, भाइयों, अपने को तथा द्रौपदी को भी हार बैठे। द्रौपदी सभी पांडवों की संपत्ति है, न कि केवल युधिष्ठिर की, इनको भरी सभा में बुला लाना अन्याय है। यही मेरा निर्णय है।"

कर्ण ने विकर्ण के शब्दों को काटते हुए कहा–"इस सभा में उपस्थित बुज़ुर्ग जो धर्म नहीं जानते, उस धर्म को तुम भोले युवक कैसे जान सकते हो? युधिष्ठिर जब अपना सर्वस्व खो बैठे, तभी द्रौपदी को भी हार बैठे। इसीलिए पांडव मौन हैं। तुम
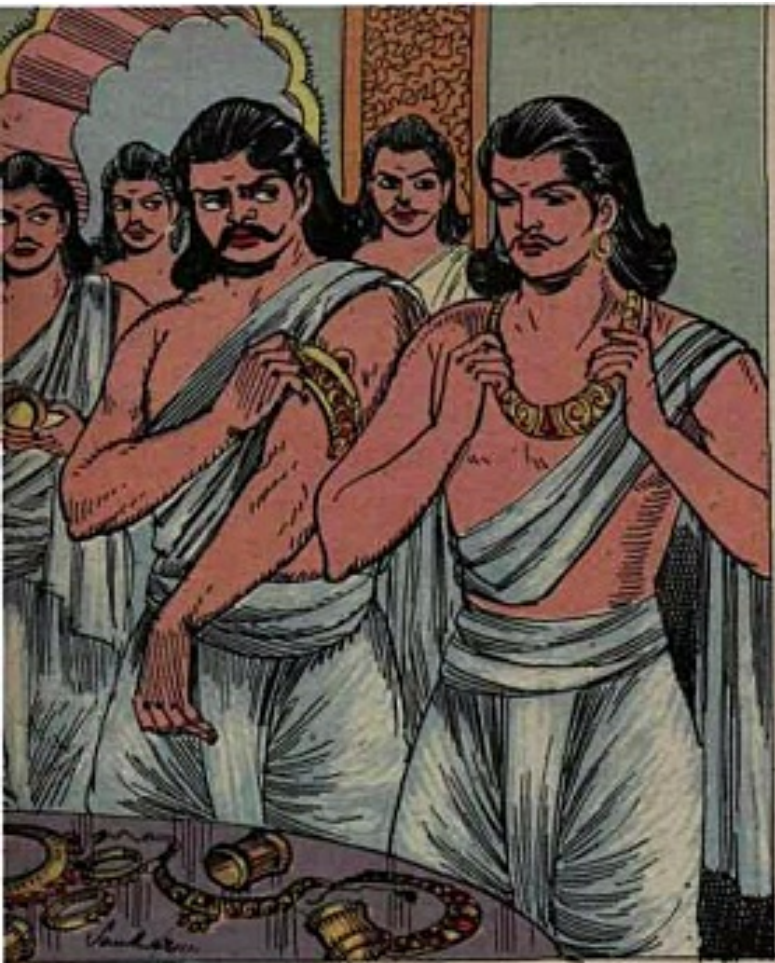
कहते हो कि द्रौपदी को सभा में ले आना अन्याय है। पाँच पतियोंवाली नारी कुलटा होती है। ऐसी नारी का भरी सभा में चीर हरण करना भी अपराध नहीं है। दुश्शासन, तुम विकर्ण की बकवास पर ध्यान न दो। तुम पांडवों तथा द्रौपदी के वस्त्र उतार कर ले आओ।"

कर्ण के मुंह से ये बातें निकलते ही पांडवों ने अपने शरीर के वस्त्र उतार कर दूर पर रखा।

दुश्शासन ने द्रौपदी का चीर उतारना प्रारंभ किया। तब द्रौपदी ने कृष्ण से प्रार्थना की कि उसकी रक्षा करे। कृष्ण अदृश्य रूप में आकर वहाँ पर खड़े हो द्रौपदी को चीर देते गये। दुश्शासन ने कई चीर उतारे, फिर भी द्रौपदी की देह पर चीर बना रहा। दुश्शासन के द्वारा उतारे गये चीरों का एक ओर ढेर लग गया, आखिर वह थक कर चुप रहा।

भीम ने असहनीय क्रोध में आकर दांतों से ओंठ काटते गरज कर कहा– "आप सब सुनिये! द्रौपदी का मान भंग करने का प्रयत्न करनेवाले इस दुश्शासन को युद्ध में मारकर, उसकी छाती फाड़ डालूंगा और उसका खून पी जाऊँगा। यही मेरी प्रतिज्ञा है।"

तब विदुर ने उठ खड़े होकर कहा– "सभासदो, द्रौपदी के प्रश्न का सही उत्तर न देना अधर्म कहलायेगा। इतने लोगों के बीच अकेले विकर्ण ने ही अपना अभिप्राय बताया। दीनों के लिए धर्म न बताने पर प्राप्त होनेवाले दोष में आधे का हम भी भागी हो जायेंगे।"

इस पर भी सब मौन रहें। दुर्योधन ने द्रौपदी को इशारा करके अपनी जांघ दिखाई। भीम के क्रोध की सीमा न रही। उसने भयंकर प्रतिज्ञा की–"मैं युद्ध में गदा से दुर्योधन की जांघों को तोड़ डालूंगा।" भीम उस वक़्त ऐसा दिखाई दे रहा था, मानों वह जलनेवाली एक ज्वाला हो!

SANKAR
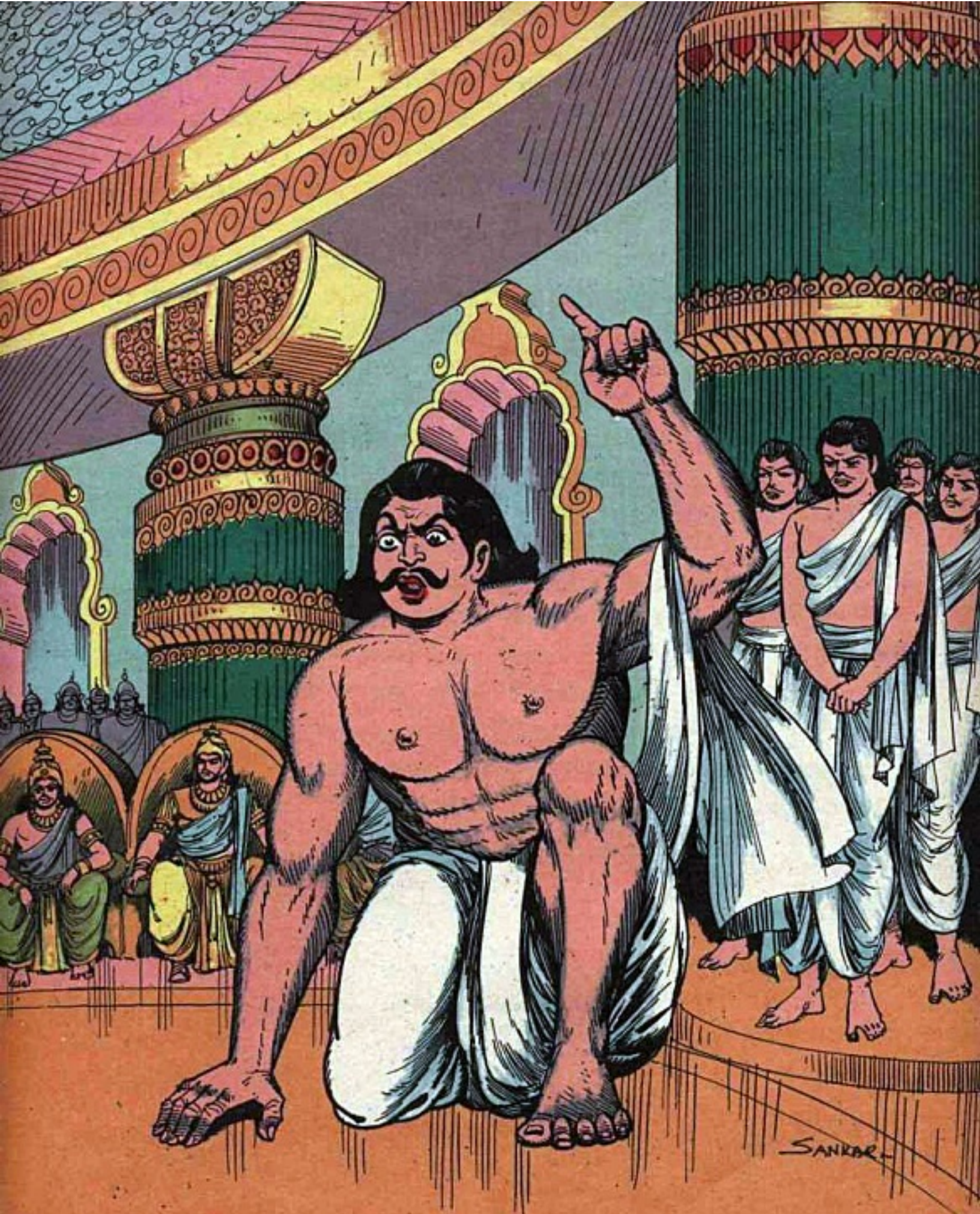
इसके बाद दुर्योधन ने द्रौपदी से कहा–"इसमें मेरा दोष नहीं है। यदि भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव यह कहे कि युधिष्ठिर उनका राजा नहीं है, मैं तुमको गुलामी से मुक्त करूँगा।"

अर्जुन ने जवाब में कहा–"यह सत्य है कि युधिष्ठिर हमारे प्रभु हैं। मगर उनके स्वयं हार जाने के बाद कौरवों को ही बताना होगा कि वे किसके प्रभु हैं।"

उस वक़्त अनेक उत्पात मच गये। उन्हें देख धृतराष्ट्र डर गया और बोला–"अरे दुष्ट दुर्योधन! तुम ज़बर्दस्ती द्रौपदी को सभा में क्यों बुलवा लाये? पांडवों से तुम्हारी शत्रुता ही क्यों? यह सब कैसा अन्याय है?" इस प्रकार दुर्योधन को डांट कर धृतराष्ट्र ने द्रौपदी को निकट बुलाकर कहा–"बेटी, मेरी बहुओं में तुम्हीं उत्तम हो। माँगो, तुम क्या चाहती हो?"

धृतराष्ट्र के प्रोत्साहन से द्रौपदी ने पांडवों को गुलामी से मुक्त करने और उनके आयुध वापस लौटाने की इच्छा प्रकट की।

"ओह! आज पांडवों का एक नारी ने उद्धार किया।" कर्ण ने व्यंग्य भरे शब्दों में कहा।

भीम ने रौद्र रूप धारण कर सभी शत्रुओं का उसी वक़्त निर्मूल करने की घोषणा की। अत्यंत प्रयत्न के साथ युधिष्ठिर और अर्जुन ने उसे शांत किया। तब युधिष्ठिर ने धृतराष्ट्र से पूछा–"राजन! आज्ञा दीजिये, हमें क्या करना है?"

"बेटा, तुम और तुम्हारे भाई इंद्रप्रस्थ जाकर सुख के साथ राज्य करो। स्नेहपूर्वक जुआ खेलने की दुर्योधन ने इच्छा प्रकट की तो मैंने तुम लोगों को बुला भेजा। बीच में जुए को न रोकना मेरी भूल ही थी। मुझे और गांधारी को देखते हुए हमारे पुत्रों के दुष्ट कार्यों को भूल जाओ। तुम्हें और तुम्हारे भाइयों का शुभ हो!" धृतराष्ट्र ने कहा।

इसके बाद पांडव द्रौपदी के साथ इंद्रप्रस्थ को लौट गये।

शिवपुराण

[२]

दक्ष अपने शिष्य भृगु इत्यादि ऋषियों को साथ ले अपने आश्रम को लौटा और वाजिपेय नामक यज्ञ किया। वह शिवजी पर नाराज था। इसलिए उसने वाजिपेय यज्ञ में शिवजी को हाविर्भाग नहीं दिया।

इस पर भी शिवजी पर दक्ष का क्रोध शांत न हुआ। इसलिए उसने "बृहस्पति" नामक महायज्ञ का संकल्प किया और उसके लिए आवश्यक सभी पदार्थों का संग्रह करके देवता तथा महर्षियों का स्वागत किया। अतिथियों का सत्कार करने के निमित्त अपने शिष्यों और रिश्तेदारों को नियुक्त किया। इस यज्ञ में भी उसने शिवजी को हिस्सा नहीं दिया।

इस यज्ञ में विश्वदेवता, मरुत्, पितृगण, अप्सराएँ, गंधर्व, सिद्ध, विद्याधर, किन्नर, यक्ष, कश्यप, अगत्स्य, अत्रि, भृगु, मरीचि, नारद, पराशर आदि महर्षि भी आये। ब्रह्मा तथा विष्णु को छोड़ शेष सभी लोग दक्ष से डरकर ही आये थे। उन सब के ठहरने का उचित प्रबंध करने के लिए दक्ष ने विश्वकर्म को नियुक्त किया।

दक्ष ने यज्ञ-दीक्षा लेकर यज्ञशाला में अपनी पत्नी के साथ प्रवेश किया। सभासदों को प्रणाम किया। निमंत्रण न मिलने के कारण शिवजी वहाँ पर उपस्थित न थे। ब्रह्मा तथा विष्णु के बुलाने पर भी वे नहीं आये। अनेक देवता और महर्षियों से भरी उस सभा में दधीचि, भृगु, मरीचि इत्यादि शिवभक्त उपस्थित थे। उन लोगों ने सभा में चारों तरफ़ अपनी दृष्टि दौडाकर दक्ष से पूछा—"हे

अंतिम पृष्ठ का चित्र

दक्ष, क्या इस यज्ञ में भाग लेने के लिए तुमने सतीदेवी तथा शिवजी को निमंत्रण नहीं दिया? वे यहाँ पर क्यों नहीं हैं?"

दक्ष ने जवाब दिया—"शिवजी कर्मभ्रष्ट है। इसलिए उसको मैंने निमंत्रण नहीं दिया। वह अपवित्र है, कपालधारी, श्मशानवासी तथा प्रेतगणों का प्रभु है।"

शिवजी की निंदा होते देख दधीचि ने कहा—"हे दक्ष, यह यज्ञ सफल न होगा। शिवजी के बिना इस यज्ञ का प्रारंभ करके तुमने विपदा और दुख को मोल लिया है।" दधीचि के मुँह से इन शब्दों के निकलते ही वामदेव, मरीचि, गौतम, शिलाद इत्यादि अनेक ऋषि यज्ञशाला से चले गये।

जानेवाले ऋषियों को देख दक्ष ने कहा—"ये लोग मूर्ख और पाखण्ड हैं। इसलिए आप लोग इस बात की चिंता किये बिना मेरे यज्ञ की पूर्ति कीजिये।"

सती कैलास पर्वत पर शिवजी के साथ सुखपूर्वक गृहस्थी चला रही थी। एक दिन वह अपनी सखियों के साथ उद्यान में विहार कर रही थी। उसने आकाश मार्ग में अनेक विमानों के जाते देखा। सतीदेवी ने अपनी सखियों को आदेश दिया कि वे विमान कहाँ जा रहे हैं, इसका पता लगावे। सखियों ने लौटकर सती को बताया कि दक्ष के द्वारा संपन्न होनेवाले यज्ञ में भाग लेने जा रहे हैं।

सतीदेवी के मन में यह इच्छा पैदा हुई कि वह भी अपने पतिदेव के साथ अपने पिता के यज्ञ में भाग ले। उसने शिवजी के पास जाकर कहा—"मेरे पिताजी यज्ञ कर रहे हैं। हम भी रुद्रगणों को साथ ले चले चलेंगे।"

इस पर शिवजी ने समझाया—"सती, तुम्हारे पिता हम से नाराज़ हैं। इसलिए हमें बुलाये बिना यज्ञ कर रहे हैं। बिना बुलावे मेहमान नहीं बनना चाहिये। हमारे जाने पर हमारा अपमान होगा और साथ ही विपत्तियाँ होंगी।"

"तब तो आप न चलिये, मैं अकेली जाऊँगी। मेरे पिता मेरा अपमान ही क्यों

करेंगे? मैं अपने पिता को समझा कर आपको निमंत्रित करने का प्रयत्न करूँगी। नंदीश्वर इत्यादि की सहायता देकर मुझे भिजवा दीजिये।" सतीदेवी ने कहा।

"सती, तुमको छोड़ मैं एक क्षण भी नहीं रह सकता। तुम मुझे छोड़ अपने पिता के यज्ञ को देखने जा रही हो। तुम्हारा अवश्य अपमान होगा! इसलिए ज़रा सोचो तो सही।" शिवजी ने सतीदेवी को पुनः समझाया।

लेकिन सतीदेवी शिवजी की बातों की सचाई समझ न पायी। वह इस बात की कल्पना भी न कर सकी कि उसी के माता-पिता उसका अपमान करेंगे। इसलिए उसने अपने मायके जाने का हठ किया।

शिवजी ने सोचा, जो होना है, सो होकर ही रहेगा। यह सोचकर शिवजी ने रुद्रगणों को साथ दे सतीदेवी को दक्ष के यज्ञ को देखने भिजवा दिया। वह नंदीश्वर को साथ ले जब यज्ञशाला के निकट पहुँची, तब उसकी माँ प्रसूती तथा उसके भाइयों ने आगे बढ़कर कुशल प्रश्न पूछे। सतीदेवी से उसकी माता ने गुप्त रूप से ये बातें कहीं—"तुम्हारे पिता वृद्ध हो चुके हैं। इसलिए तुम्हारे पति की निंदा कर रहे हैं, तुम कुछ दखल न दो।" इसके बाद सतीदेवी को यज्ञशाला के भीतर ले गयी।

दक्ष का अपनी पुत्री को देखते ही शिवजी पर क्रोध उमड़ पड़ा। उसने सतीदेवी से कहा—"तुम्हारा पति श्मशानवासी है। पिशाचों पर शासन करता है। कपाल धारण करता है। अपवित्र है। वह यज्ञ-याग इत्यादि के लिए निमंत्रित करने योग्य नहीं है। क्या तुम इस यज्ञ को अपवित्र करने आयी हो?"

सतीदेवी ने ये बातें सुनकर अपने पिता से कहा—"तुम यज्ञकर्ता शिवजी को हविर्भाग दिये बिना यज्ञ करते हो? उल्टे उनकी निंदा करते हो। अब भी सही उनको निमंत्रण देकर यज्ञ का भाग देकर उनका

आदर करो। नहीं तो तुम्हारा यज्ञ पूरा न होगा, तुम्हारा विनाश भी होगा।"

सतीदेवी के ये बातें कहने के बाद उस सभा में उपस्थित भृगु इत्यादि ने दक्ष को सलाह दी कि सतीदेवी के कहे अनुसार करे। परंतु दक्ष और भड़क उठा और बोला–"सती? तुम्हारा चेहरा देखना भी पाप है। तुम इसी वक़्त यज्ञशाला को छोड़ चली जाओ, वरना जबर्दस्ती तुमको यहाँ से बाहर भिजवा दूँगा।"

सतीदेवी का हृदय खौल उठा। उसने समझा कि पति की बात की परवाह किये बिना आना बहुत ही बुरा हुआ। इस प्रकार अपमानित हो अपने पतिदेव के पास लौटने की उसकी इच्छा न हुई। पुनर्जन्म में भी शिवजी को अपने पति के रूप में कामना करते उसने अपनी योगशक्ति से अग्नि पैदा की और उसमें अपने प्राण त्याग दिये।

इस दृश्य को देख नंदीश्वर वगैरह हाहाकार करते यज्ञशाला में प्रवेश करने को हुए, तब भृगु महर्षि ने अभिचार होम करके उनको भगाया।

नारद इत्यादि लोगों ने कैलाश में जाकर यह वृत्तांत शिवजी को सुनाया। शिवजी ने क्रोधावेश में आकर हुंकार किया और अपनी एक जटा को उखाड़ कर पर्वत पर पटक दिया। तब उस जटा में से भद्रकाली और वीरभद्र पैदा हुए। वीरभद्र एक हज़ार हाथों, लंबे दांतों, तथा एक करोड़ सूर्यों की कांति से रौद्ररूप में शोभित था। उसने शिवजी को प्रणाम करके पूछा–"पिताजी, आज्ञा दीजिये।"

"बेटा, तुम और भद्रकाली अपने गणों के साथ जाकर दक्ष के यज्ञ का ध्वंस करो और उसमें भाग लेनेवालों को दण्ड दो।"

वीरभद्र सिंहों से जुते रथ पर सवार हो नंदीश्वर, चंडीश्वर, भैरव इत्यादि गणों को साथ ले चल पड़ा। भद्रकाली सिंह पर आरूढ़ हो महाकाली, गौरी, कात्यायनी, चामुण्डा इत्यादि महाशक्तिवाले गणों को साथ ले निकल पड़ी।

११२. दस हजार धुएँ की घाटियाँ

अलास्का (उत्तर अमेरिका) के कट्माय पर्वतों में एक अग्निपर्वत १९१२ जून में फूट पड़ा। यह इतिहास के महान विस्फोटों में से एक है। इसके परिणाम स्वरूप सात घन मील के परिणाम में धुआँ तथा झांवा (प्यूमिस) भूगर्भ में से आसमान में उठे और १५०० मील दूर जा गिरे। इस धूलि से संसार का पूरा वायुमण्डल प्रभावित हो उठा।

१९१५ तथा १९१६ में विस्फोट हुए इस प्रदेश को अनुसंधानकर्ताओं ने जाकर देखा। वह सारा प्रदेश निर्जीव था। सर्वत्र झाँवा गिरा हुआ था। कट्माय समुद्री तट पर घास का एक तिनका तक न था। जहाँ भी देखे गड्ढे थे, पहाड़ों पर जब-तब चट्टानें लुढ़क कर गिर जाती थीं। अग्निपर्वत प्रदेश की नदी घाटी में स्थित घर धूलि में डूबे हुए थे। अनेक स्थानों पर झांवे की शिलाएँ दिखाई दीं, वे पानी में भी तिरती थीं।

उस विस्फोट के कारण जंगल के जंगल झुलस गये और पेड़ शवों की भांति खड़े थे। मगर वहाँ के दृश्यों में अपूर्व दृश्य जो है—"दस हजार धुएँ की घाटी"। उस घाटी में असंख्य छोटे-छोटे अग्नि पर्वत थे जिनमें से भाप ऊपर उठ रहा था। वह भाप एक हजार बिलों में से ५०० फुट ऊंचाई तक ऊपर उठ रहा था।

Photo by Prabhakar Mahadik
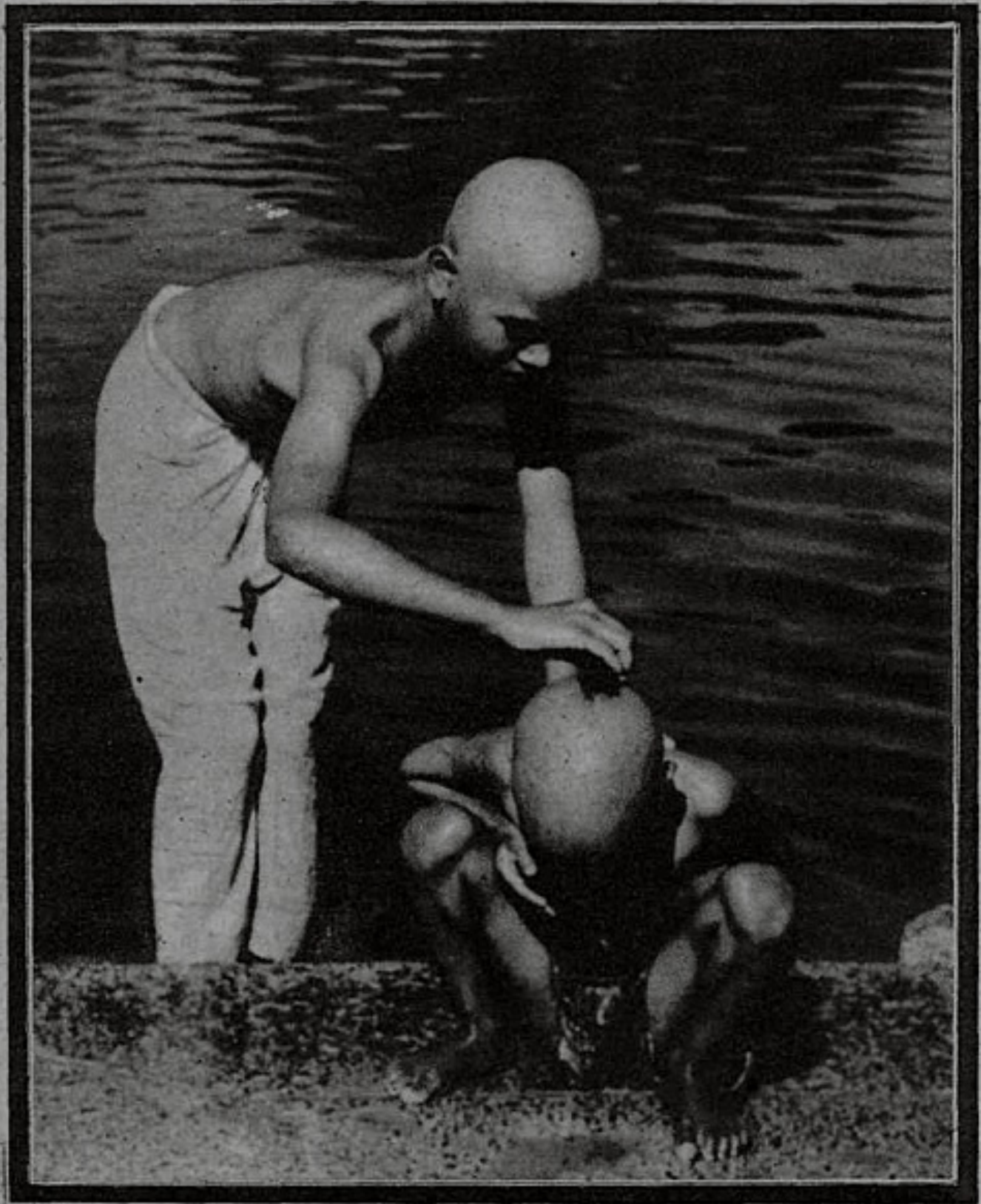
पुरस्कृत
परिचयोक्ति

सर मुंडाये सन्यासी लगते।

प्रेषक:
प्रकाश त्रिवेदी

Photo by Prabhakar Mahadik
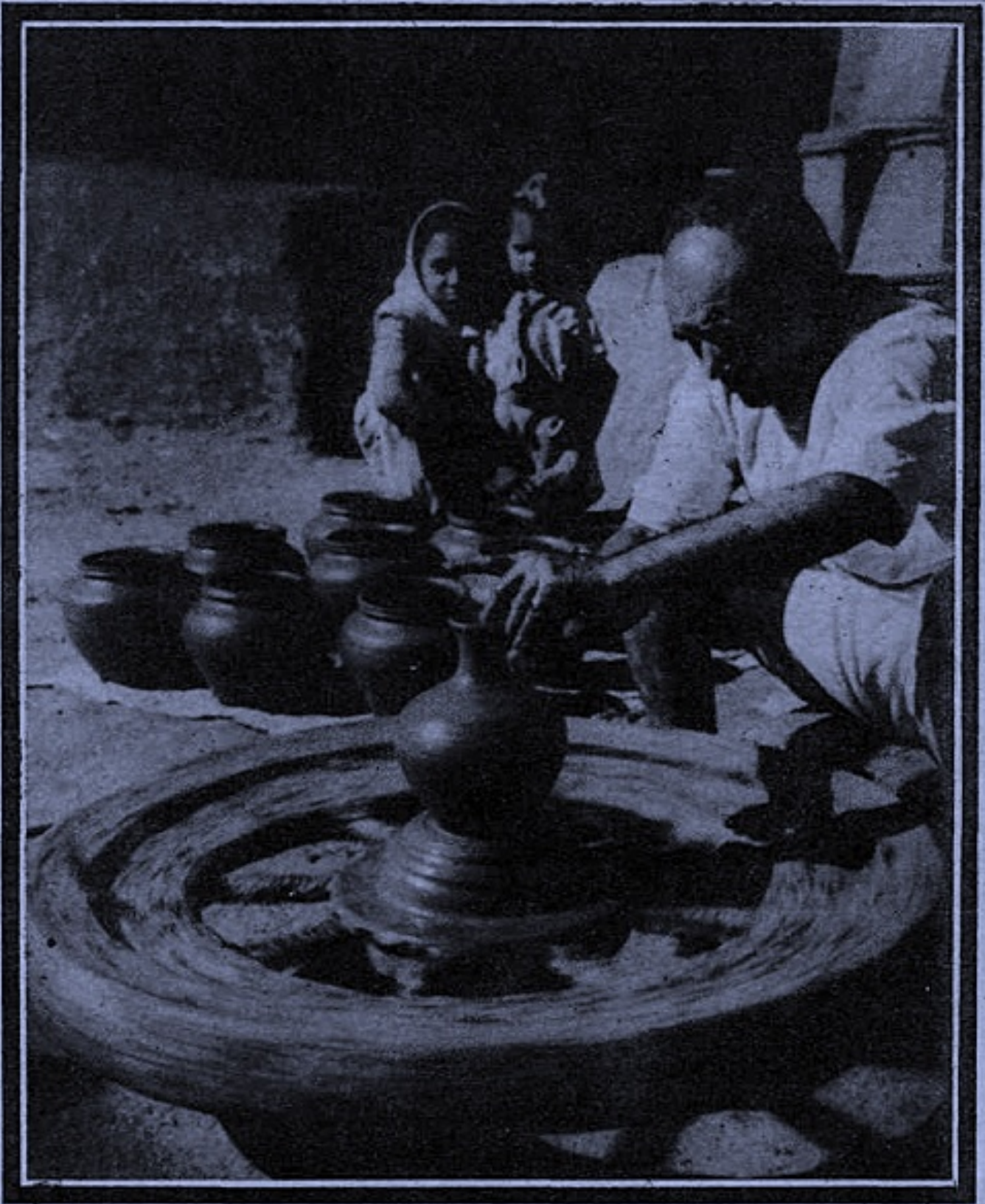
पुरस्कृत
परिचयोक्ति

चाक घुमाये बर्तन गढ़ते ।

प्रेषक.:
प्रकाश त्रिवेदी

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता

जून १९७१ :: पारितोषिक २०)

कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें।

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिये। परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिखकर निम्नलिखित पते पर तारीख़ १० अप्रैल १९७१ के अन्दर भेजनी चाहिये।

फ़ोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन,
वड़पलनी, मद्रास-२६

अप्रैल – प्रतियोगिता – फल

अप्रैल के फ़ोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गयी हैं। इनके प्रेषक को २० रुपये का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो: **सर मुंडाये सन्यासी लगते।**

दूसरा फ़ोटो: **चाक घुमाये बर्तन गढ़ते।**

प्रेषक: **श्री प्रकाश त्रिवेदी,**
केमिस्ट्री डिपार्टमेंट, दिल्ली यूनिवर्सिटी, दिल्ली - ७

Printed by B. V. REDDI at The Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for Sarada Binding Works, 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Edifor: 'CHAKRAPANI'

आप लोगों के अत्यंत प्रिय मासिक पत्र

चन्दामामा

का मूल्य जुलाई से थोड़ा बढ़ाया जा रहा है। आगे उसके एक प्रति का मूल्य ९० पैसे होगा और वार्षिक चन्दा रु. १०-८० पैसे मात्र। हम विश्वास करते हैं कि मूल्य के बढ़ने के बावजूद भी 'चन्दामामा' के प्रति आपका प्रेम पूर्ववत् बना रहेगा।

★

चन्दामामा पब्लिकेशन्स

वडपलनी :: मद्रास - २६

AWARDS!
WON PLENTY
YET WE DON'T SAY
WE ARE THE BEST
ONLY
WE DO OUR BEST
PRASAD PROCESS PRIVATE LTD
CHANDAMAMA BUILDINGS MADRAS-26
भारत सरकार
सूचना और प्रसारण मंत्रालय